TITLE CODE : UPHIN50246

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

लोक पहल

शाहजहाँपुर | वृहस्पतिवार | 21 सितम्बर 2023 | शाहजहाँपुर से प्रकाशित | वर्ष :2 | अंक :29 | पृष्ठ :8 | मूल्य 2 रुपये

नारी शक्ति वंदन नई संसद का अभिनंदन

नई दिल्ली एजेंसी। संसद के विशेष सत्र सही मायनों में ऐतिहासिक साबित हो रहा है। सरकार की तरफसे सबसे पहले महिला आरक्षण बिल पेश किया गया। इसे लोकसभा से पारित भी कर दिया गया। इस बिल के पक्ष में 454 वोट पड़े हैं, यानी कि दो तिहाई से भी ज्यादा बहुमत के साथ ये पारित हुआ है। बड़ी बात ये है कि बिल पारित होने के बाद भी अभी इस समय ये कानून नहीं बन पाएगा।

असल में जब तक देश में जनगणना और परिसीमन नहीं हो जाता, नारी शक्ति वंदन अधिनियम कानून नहीं बन सकता है। यानी कि 2029 में ही महिलाओं को इस कानून का फायदा हो सकता है। अब इस बिल का ये वाला प्रावधन ही इसे विवादों में ला रहा है, विपक्ष सरकार की मंशा पर सवाल उठा रही है। सरकार का सिर्फ इतना तर्क है कि उनके लिए ये राजनीति का मुद्दा नहीं है, बल्कि महिला सम्मान का मुद्दा है, उन्हें समान अधिकार देने का मुद्दा है।

जब ये बिल कानून बन जाएगा तब महिलाओं के लिए 33 फीसदी आरक्षण हो जाएगा। सरल शब्दों में लोकसभा की जो 543 सीटें हैं, वहां पर 181 महिलाओं के लिए आरक्षित रहेंगी। इसके अलावा देश में एसी-एसटी के लिए जो 131 सीटें आरक्षित रहती हैं, वहां भी 43 सीटें महिलाओं के लिए रहने वाली हैं। यहां ये समझना जरूरी है कि महिलाओं के लिए सीटों का आरक्षण 15 साल के लिए ही होगा। विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन मेघवाल ने संसद में बिल पेष करते हुए कहा कि इस विधेयक के कानून बन जाने के बाद महिलाओं के लिए लोकसभा और विधानसभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान हो जाएगा। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की विधानसभी में भी एक तिहाई सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित करने के लिए संविधान के अनुच्छेद-239एए में संशोधन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि संविधान में अनुच्छेद-332ए जोड़कर विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33 प्रतिषत आरक्षण का प्रावधान किया जायेगा। माना जा रहा है कि लोकसभा में महिला आरक्षण की व्यवस्था 2029 के आम चुनावों में ही लागू हो पाएगी। श्री मेघवाल ने कहा कि महिला आरक्षण विधेयक 15वीं लोकसभा में पेश किया गया था लेकिन उस समय यह पारित नहीं हो पाया था।

यूएन को झटका! जलवायु परिवर्तन की बैठक में कार्बन फैलाने वाले देश ही नदारद

न्यूयॉर्क एजेंसी। जलवायु महत्वकांक्षा सम्मेलन के दौरान जीवाश्म ईंधन के इस्तेमाल पर चरणबद्ध तरीके से रोक लगाने और नवीकरणीय ऊर्जा के इस्तेमाल को बढ़ावा देने की अपील की गई। हालांकि इस सम्मेलन में प्रमुख कार्बन उत्सर्जक देश नदारद रहे। ऐसे में सम्मेलन की सार्थकता पर ही सवाल उठ रहे हैं। यह सम्मेलन ऐसे वक्त हो रहा है, जब दुनिया में जलवायु परिवर्तन के गंभीर प्रभाव दिख रहे हैं और साल दर साल गर्मी बढ़ती जा रही है।

संयुक्त राष्ट्र की जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर हुए इस प्रमुख सम्मेलन में प्रमुख कार्बन उत्सर्जक देशों के नेता ही शामिल नहीं हुए। इनमें अमेरिका, चीन, ब्रिटेन, जापान, फ्रांस और भारत जैसे कार्बन उत्सर्जक देश भी शामिल नहीं हुए। प्रमुख कार्बन उत्सर्जक देशों में सिर्फयूरोपीय यूनियन के नेता ही सम्मेलन में मौजूद रहे। इस बैठक में लगभग हर देश के प्रतिनिधि ने जीवाश्म ईंधन को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने की जरूरत पर जोर दिया। यूरोपीय संघ आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन, जर्मन चांसलर ओलाफ शुल्ज, चिली के राष्ट्रपति ग्रैब्रियल बोरिक, मार्शल द्वीप के राष्ट्रपति आदि ने तात्कालिक तौर पर जीवाश्म ईंधन के इस्तेमाल पर रोक की मांग की।

कनाडा के पीएम जस्टिस ट्रूडो ने भी साल के अंत तक उनके देश में तेल और गैस उत्सर्जन नियमों को सख्त कर 2030 तक मौजूदा मीथेन कटौती के लक्ष्य को बढ़ाकर 75 प्रतिशत करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने सम्मेलन की अध्यक्षता की।

भारत तीसरी बड़ी इकोनॉमी बनने को संकल्पित : द्रौपदी मुर्मू

- उप्र के पहले अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले का शुभारंभ

नोएडा एजेंसी। इंडिया एक्सपो सेंटर एंड मार्ट में यूपी के पहले अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला का शुभारंभ हुआ। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने इसकी शुरुआत की। पांच दिनी व्यापार मेले में दो हजार से अधिक उत्पादक और 3 ब्रांड भाग ले रहे हैं। इसमें 22 से 25 सितंबर तक आम जनता को निशुल्क प्रवेश मिलेगा। सरकार को उम्मीद है कि मेले में 6 देशों समेत करीब दो से ढाई लाख लोग पहुंचेंगे।

उत्तर प्रदेश के पहले इंटरनेशनल ट्रेड शो के उद्घाटन पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा, आज भारत दुनिया की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और जल्द ही हम तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के लिए संकल्पित हैं। इस संकल्प को प्राप्त करने के लिए, यूपी को अहम भूमिका निभानी है। यूपी ने अपनी अर्थव्यवस्था को एक ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का संकल्प लिया है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा, कि ट्रेड फेयर में २,००० से अधिक प्रदर्शक हिस्सा ले रहे हैं और करीब 7० देशों की सहभागिता इस अंतरराष्ट्रीय ट्रेड शो के सामने नए भारत के नए उत्तर प्रदेश को प्रस्तुत करती है।' पहले उत्तर प्रदेश अंतरराष्ट्रीय व्यापार शो के उद्घाटन कार्यक्रम के दौरान राज्य के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा, कि 'यह उत्तर प्रदेश का पहला ट्रेड शो है। उत्तर प्रदेश ने पिछले 6 वर्षों में एक बिमारू राज्य से उभरकर आज देश की अर्थव्यवस्था के एक समृद्ध राज्य की ओर कदम बढ़ाया है और उसको प्रदर्शन करने का अवसर अंतरराष्ट्रीय ट्रेड शो हमारे सामने है।

बहन-बेटी के साथ की छेड़कानी तो अगले चौराहे पर मिलेंगे 'यमराज'

लोक पहल

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ गोरखपुर के मानसरोवर रामलीला मैदान में आयोजित समारोह में 343 करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं का शिलान्यास व लोकार्पण किया। इस दौरान सीएम योगी ने महिलाओं और बालिकाओं के संरक्षण को लेकर बात की।

मुख्यमंत्री ने कहा कि कानून-व्यवस्था में सेंध लगाने की अनुमति किसी को नहीं है। लोगों की सुरक्षा के लिए कानून है, लेकिन अगर किसी ने राह चलते बहन-बेटी के साथ छेड़खानी की तो अगले चौराहे पर उस शोहदे का इंतजार यमराज कर रहे होंगे और उस शोहदे को फिर यमराज के यहां भेजने से कोई रोक नहीं पाएगा। योगी ने कहा कि सरकार विकास, लोक कल्याण व बिना भेदभाव सभी लोगों तक योजनाओं का लाभ पहुंचाने के लिए संकल्पित और समर्पित है। सरकार के साथ यदि नागरिक भी अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते रहेंगे तो विकास कार्यों में बैरियर बनने वाले खुद बेनकाब होते दिखेंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मगर्दर्शन में विगत छह वर्षों में उत्तर प्रदेश और गोरखपुर ने विकास से अपनी नई पहचान बनाई है। आज उत्तर प्रदेश की पहचान देश में विकास, सुशासन और बेहतरीन कानून व्यवस्था की है। यहां दशकों से लंबित परियोजनाएं पूरी हो रही हैं।

अधिकारी को हिन्दी प्रेम पड़ा भारी

मातृभाषा में किया पत्राचार तो हुआ तबादला

लोक पहल

लखनऊ। एक ओर सरकार जहां 14 सितम्बर हिंदी दिवस से हिन्दी पखवाड़ा मनाकर हिन्दी के उत्थान के लिए बड़े-बड़े दावे करती है वहीं दूसरी ओर एक अधिकारी को हिन्दी का समर्थन करना भारी पड़ गया और उसे बिना किसी कारण के तबादले पर भेज दिया गया। हिंदी पखवाड़ा दिवस पर भारतीय राजस्व सेवा के वरिष्ठ अधिकारी और सीजीएसटी कमिश्नर सोमेश तिवारी का हिंदी प्रेम उन्हें ही उल्टा पड़ गया। राजभाषा में पत्रावली से लेकर दिशा-निर्देशों को अंग्रेजी में जारी करने के विरोध ने केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीआईसी) में खलबली मचा दी है।

उन्होंने प्रमाण के साथ शिकायत प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) तक की है। पीएमओ ने पूरे मामले में सात दिन के अंदर रिपोर्ट मांगी लेकिन कोई जवाब नहीं दिया गया। नतीजा ये हुआ कि उनका ट्रांसफर गुंटूर कर दिया गया। नियमों को किनारे रख किए गए ट्रांसफर के विरोध में वे हाईकोर्ट चले गए हैं। कानपुर में जीएसटी आयुक्त ऑडिट पद पर कार्यरत सोमेश तिवारी राजभाषा का कार्य भी करते हैं। राजभाषा में पत्राचार की पैरवी करते हैं। वह विभाग में 90 फीसदी से ज्यादा कामकाज अंग्रेजी में होने का लगातार विरोध कर रहे थे।

हिंदी में कामकाज न करने के कारण वरिष्ठ आईआरएस अधिकारी ने पूरे मामले की शिकायत केंद्रीय वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण, केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से कर दी। पीएमओ से इस मामले में जवाब भी बोर्ड से मांगा गया लेकिन कुछ नहीं हुआ और उल्टा उनका तबादला गैर हिन्दी भाषी आंध्र प्रदेश के गुंटूर में कर दिया गया। जबकि ट्रांसफर लिस्ट में उनका नाम तक नहीं था। भारतीय राजस्व सेवा के वरिष्ठ अधिकारी सोमेष तिवारी का कहना है कि हिन्दी दिवस पर ही राजभाषा के सम्मान के लिए हिन्दी में पत्राचार करना ही उनके लिए भारी पड़ गया और तबादले का सामना करना पड़ा।

UP
का तेजी से उभरता हुआ
लोक पहल
अखबार
से जुड़कर बने जनता की आवाज
मो. 9935740205, 9455152599

भारत में जातिवादी व्यवस्था लागू करने में सरकारों की मुख्य भूमिकाः अश्वनी उपाध्याय

एसएस ला कालेज में 'भारतीय संविधान का उद्देश्य एवं लक्ष्य' पर व्याख्यान का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। स्वामी शुकदेवानंद विधि महाविद्यालय में ''भारतीय संविधान का उद्देश्य एवं लक्ष्य'' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। सत्र का शुभारंभ स्वामी शुकदेवानंद सरस्वती के चित्र पर पुष्पांजलि एवं दीप प्रज्वलन से हुआ।

मुख्य अतिथि व मुख्यवक्ता उच्चतम न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता अश्वनी कुमार उपाध्याय ने कहा कि भारतीय संविधान का लक्ष्य राम-राज्य की स्थापना के साथ ही मानव कल्याण पर आधारित है, जिसके अंतर्गत ''धर्म की स्थापना हो, प्राणियों में सद्भाव हो, विश्व का कल्याण हो, अधर्म का नाश हो'' स्थापित करने के लिए संविधान के अंतर्गत मौलिक अधिकार एवं नीति निर्देशक तत्वों के रूप में उपबन्धित किया गया है। अंग्रेजी शासन के दौरान बनाए गए कानून भारत में व्यवस्था स्थापित करने के उद्देश्य से नहीं बल्कि भारतीयों के अधिकारों के दमन के लिए बनाए गए थे। उन्होंने कहा कि भारत में जातिवादी व्यवस्था को स्थापित करने में सरकारों की मुख्य भूमिका रही। सरकारों ने यदि गोत्र व्यवस्था को लागू की होती तो आज मात्र सौ गोत्रो में कई हजार जातियों को शामिल किया जा सकता था। शराब बंदी के लिए धर्मगुरुओं को आगे आकर लिखना, बोलना या विरोध करना चाहिए। उन्होंने कहा कि न्याय का अधिकार हमारा मूल अधिकार है एक साल में न्याय मिले इसके लिए कानून का निर्माण किया जाना चाहिए। यदि एक साल में न्याय प्राप्त हो जाता है तो हमारे देश में न्याय के प्रति लोगों का विश्वास बढ़ेगा। आज देश में 1० करोड़ मुकदमे है तो कम से कम 6० करोड लोग टेंशन में हैं। स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती ने कहा कि आज के वर्तमान कानून गुलामी के प्रतीक हैं ऐसे कानून को समाप्त कर देना चाहिए। ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय लखनऊ के पूर्व कुलपति प्रो. माहरुख मिर्जा ने कहा कि देश में तकनीकी और आर्थिक समृद्धि के साथ-साथ अंग्रेजी पूरे देश पर हावी होती जा रही है। हिन्दी देश की राजभाषा होने के बावजूद आज हर जगह अंग्रेजी का वर्चस्व कायम है। आज के तकनीकी युग में विधि के क्षेत्र में भी हिंदी में काम को बढ़ावा देना चाहिए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए बार एसोसिएशन के अध्यक्ष बृजेश वैश्य ने कहा कि अधिवक्ता का दायित्व है कि संविधान और कानून को सही तरीके से पढ़ना और इसे लागू करवाना। डॉ. अनुराग अग्रवाल ने के संचालन में हुए कार्यक्रम के अंत में प्रो. डा. अवनीश मिश्रा ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर अधिवक्ता मनेंद्र सिंह, अशोक अग्रवाल सचिव प्रबंध समिति, फिरोज हसन खान, ओम सिंह, प्रो. आरके आजाद प्राचार्य एसएस कॉलेज, लॉ कॉलेज के प्राचार्य डॉ. जय शंकर ओझा, डॉ. अनिल कुमार शाह, डा. कविता भटनागर, डॉ. अमित कुमार यादव, डॉ. पवन कुमार गुप्ता तथा छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

व्यापार में बढ़ाना होगा सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोगः डा. संजय मिश्रा

एसएस कालेज में "रोल आफ इनफोर्मेशन टेक्नोलोजी इन बिजनेस डेवेलोपमेंट" विषय पर संगोष्ठी का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। एसएस कॉलेज में बीबीए एवं बीसीए विभाग की ओर से 'रोल ऑफइनफार्मेशन टेक्नोलॉजी इन बिजनेस डेवेलेपमेंट' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी का शुभारंभ मां सरस्वती की प्रतिमा पर दीप प्रज्वलन, पुष्पांजलि एवं माल्यार्पण कर किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ डॉ कविता भटनागर के निर्देशन में सरस्वती की वंदना से हुआ। मुख्य अतिथि रुहेलखंड विश्वविद्यालय के बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन विभाग के प्रोफेसर डा. संजय मिश्रा ने कहा कि आज वैश्विक प्रतिस्पर्धा में यदि भारत को उच्च शिखर पर प्रतिचिन्ह होना है तो सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग को व्यापार में और अधिक बढ़ाना होगा।

गोष्ठी की आध्यक्षता करते हुए स्वामी चिन्मयानन्द सरस्वती ने सूचना प्रौद्योगिकी को चंद्रयान से जोड़ते

हुए कहा यह सूचना प्रौद्योगिकी का ही सफल है कि आज चंद्रयान तृतीय सफल हुआ। आकाश की यह विजय यहां ही नहीं रुकी है समुद्र यान के द्वारा पाताल तक पहुंचेगी। यह सूचना प्रौद्योगिकी का ही परिणाम है कि आदित्य एल 1 सफलतापूर्वक स्थापित हो सका। मुख्य वक्ता रुहेलखंड विश्वविद्यालय के कंप्यूटर साइंस एवं इनफोर्मेशन टेक्नोलोजी विभाग के प्रो. डॉ अनिल सिंह बिष्ट ने पीपीटी के माध्यम से बेहद सहज एवं सरल ढंग से तकनीक से व्यापार की वृद्धि और मानवता के इतिहास के क्रम को व्यापार की दृष्टि से प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ महिमा सिंह ने किया तथा स्वागत डा. अनुराग अग्रवाल ने किया। इस दौरान प्राचार्य डा. आरके आजाद, डा. अभिजीत मिश्र, डा. सुमित सक्सेना, डॉ रजत कुमार सिंह, डा. उमेश सिंह बिसेन, डॉ राजेश सक्सैना, डॉ सुमित कुमार त्रिवेदी, डा. अनामिका शुक्ला, विपुल दीक्षित आदि मौजूद रहे।

जीएफ कालेज में हिन्दी सप्ताह समारोह के विजेता पुरस्कृत

लोक पहल

शाहजहांपुर। जीएफ कॉलेज में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण के साथ 'हिंदी सप्ताह समारोह' का समापन हो गया। 14 से 2० सितंबर तक हिंदी विभाग की ओर से आयोजित हिंदी सप्ताह के तहत भाषण, निबंध, सुलेख, शुद्ध वर्तनी, सरकारी पत्र लेखन आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

पत्र लेखन प्रतियोगिता में हर्ष पांडेय को प्रथम तथा हिमांशु शुक्ला को द्वितीय स्थान हासिल किया। सुलेख प्रतियोगिता में हिमांशु शुक्ला को प्रथम, अरीबा नईम को द्वितीय तथा शिवानी राठौर को तृतीय स्थान और रामकृपाल सिंह तथा ज्ञानेश यादव को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया। शुद्ध वर्तनी लेखन में हिमांशु शुक्ला एवं सारिका मौर्य को प्रथम पुरस्कार, शिवानी राठौर को द्वितीय पुरस्कार तथा नीलेश चौबे और सृष्टि आर शर्मा को तृतीय पुरस्कार हासिल हुआ। स्लोगन प्रतियोगिता में शैलजा देवी को प्रथम, हिमांशु शुक्ला को द्वितीय तथा संजना सिंह को तृतीय स्थान और अनामिका तिवारी को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया। निंबध लंखन प्रतियोगिता में सानिया फातिमा को प्रथम, फैजिया को द्वितीय और मन्तशा को तृतीय स्थान और अरशद अली एवं सानिया को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ। प्राचार्य डॉ मोहम्मद तारिक ने विजेताओं को स्मृति चिह्न और प्रमाण-पत्र प्रदान किए।

इस अवसर पर विभागाध्यक्ष डॉ फैयाज अहमद, डॉ मोहम्मद काशिफनईम तथा डॉ परवेज मुहम्मद ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन डॉ मोहम्मद अरशद खान तथा आभार डॉ शमशाद अली ने व्यक्त किया।

एसएस कालेज में वनस्पति विज्ञान में प्रिया शर्मा ने किया टॉप

लोक पहल

शाहजहाँपुर। स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय का एमएससी प्रथम वर्ष सेमेस्टर वनस्पति विज्ञान का रिजल्ट एमजेपी रोहिलखंड विश्वविद्यालय द्वारा घोषित किया गया। महाविद्यालय का वनस्पति विज्ञान का रिजल्ट शत-प्रतिशत रहा। प्रिया शर्मा 9.17 एसजीपीए प्राप्त कर प्रथम स्थान पर रही जबकि द्वितीय व तृतीय स्थान पर क्रमशः 9.० व 8.87 एसजीपीए प्राप्त कर सेजल कश्यप व वैशाली सिंह रही। मुमुक्षु शिक्षा संकुल के मुख्य अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती, सचिव डॉ अवनीश मिश्रा व प्राचार्य प्रोफेसर (डॉ) राकेश कुमार आजाद ने विद्यार्थियों को बधाई व आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर वनस्पति विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ आदर्श पाण्डेय व जंतु विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ रमेश चंद्रा सहित डॉ मुमताज हुसैन, डॉ शिखा सक्सेना, डॉ निधि त्रिपाठी, मोहित पाण्डेय, दीपक, अजय आदि ने सभी सफल विधार्थियों को बधाई दी।

प्रिया शर्मा, प्रथम स्थान

सेजल

वैशाली सिंह

राष्ट्रीय सेमिनार में हुई अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी पर चर्चा

एसएस कालेज में 'रिसेंट एडवांसेज इन फिजिक्स' विषय पर राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। एसएस कालेज में भौतिक विज्ञान विभाग की ओर से 'रिसेंट एडवांसेज इन फिजिक्स' विषय पर राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, देहरादून के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ हरिशंकर गंगवार ने सुदूर संवेदन तकनीक एवं हाल में भारत द्वारा छोड़े गए अंतरिक्ष मिशनों चंद्रयान-3 एवं आदित्य एल 1 में प्रयुक्त तकनीकी पर विस्तार से प्रकाश डाला। प्रेक्षण की विभिन्न विधियों जैसे प्रयोगशाला प्रेक्षण, भूमि से आकाश एवं आकाश से भूमि के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के उपग्रहों एवं उनके उपयोगों पर चर्चा की। सुदूर संवेदन तकनीक के लाभों के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि इसके द्वारा ज्वालामुखी विस्फोटों, प्लेट विस्थापन, स्मॉल स्केल मेजरमेंट, ग्लोबल कवरेज, पर्यावरणीय मॉडलिंग, डेली मेडिसिन, टेली एजुकेशन, विभिन्न प्रकार की सरकारी योजनाओं की निगरानी के साथ-साथ प्राकृतिक आपदाओं पर भी नियंत्रण किया जा सकता है।

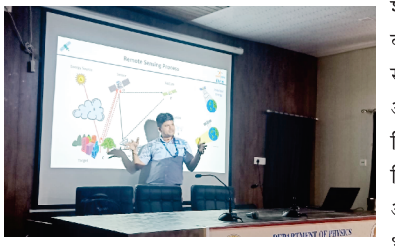

शारदा विश्वविद्यालय के डॉ पंकज कुमार त्रिपाठी ने बताया कि द्रव्य की तीन अवस्थाओं के साथ-साथ कुछ अन्य अवस्थाएं भी हैं जो विशेष भौतिक स्थितियों में पाई जाती हैं। विभिन्न अवस्थाओं के बीच अवस्था संक्रमण को भी उन्होंने चित्रों के माध्यम से समझाया।

लखनऊ के जय नारायण स्नातकोत्तर महाविद्यालय के डॉ कमल कुमार पांडेय ने दैनिक जीवन में भौतिकी के उपयोग को बड़े ही रोचक ढंग से समझाया। सेल फोन, कार में लगी सीट बेल्ट, बैटरी साइकिल, खेल, हेडफोन, मोबाइल, टेलीविजन इत्यादि में भौतिक विज्ञान के उपयोग से उन्होंने विद्यार्थियों को परिचित कराया। सेमिनार के ऑनलाइन सत्र में विभिन्न शोधार्थियों ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए। कार्यक्रम में मुमुक्षु शिक्षा संकुल के मुख्य अधिष्ठाता स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती ने विद्यार्थियों को आशीर्वचन दिया। भौतिक विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ शिशिर शुक्ला के संचालन में हुए कार्यक्रम में विज्ञान संकाय के सहसंकायाध्यक्ष डॉ आलोक सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ आर के आजाद, उपप्राचार्य डॉ अनुराग अग्रवाल ने अतिथियों को सम्मानित किया। कार्यक्रम में राजनंदन सिंह राजपूत, अमित गंगवार, सत्येंद्र कुमार सिंह, नितिन शुक्ला, डॉ संदीप दीक्षित, चंदन गोस्वामी, हर्ष पाराशरी, मंजीत कुमार सिंह आदि उपस्थित रहे।

दूरदर्शी सोच रखते थे महात्मा गॉधीः सुरेश खन्ना

महान शहीद नवाब निजाम अली खां के जीवन पर आधारित पुस्तक का विमोचन

लोक पहल

शाहजहांपुर। प्रदेश सरकार के वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री सुरेश खन्ना ने कहा कि शाहजहांपुर की धरा बलिदानियों की भूमि है 1857 के स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर 1947 देश आजाद होने तक यहाँ के तमाम वीर सपूतों ने देश की आजादी के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। श्री खन्ना यहाँ गांधी पुस्तकालय में रिटायर्ड कर्नल विपिन बिहारी श्रीवास्तव द्वारा महान शहीद नवाब निजाम अली खां पर लिखित पुस्तक के विमोचन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि महात्मा गॉधी बहुत दूरदर्शी सोच वाले व्यक्ति थे उन्हें पता था कि अंग्रेजों से केवल युद्ध करके आजादी हासिल नहीं की जा सकती इसलिए उन्होंने अहिंसा के मार्ग अपनाया। श्री खन्ना ने कहा कि तमाम ऐसे शहीद हुए जिन्होंने आजादी की लड़ाई में अपने प्राणों की आहुति दी लेकिन उन्हें कोई जानता नहीं। कर्नल विपिन बिहारी श्रीवास्तव ने शाहजहांपुर के महान शहीद नवाब निजाम अली खां के जीवन के व्यक्तित्व और कृतित्व पर पुस्तक लिखकर नयी पीढ़ी को शहीद नवाब निजाम अली खां के बारे में जानने का अवसर दिया है। इससे पूर्व विमोचन समारोह का शुभारंभ श्रीवास्तव ने सभी का स्वागत किया।इसके उपरांत मंत्री सुरेश खन्ना और अन्य अतिथियों ने पुस्तक का विमोचन किया व पुस्तक के लेखक विपिन बिहारी श्रीवास्तव को शाल ओढाकर सम्मानित किया। मंत्री सुरेश खन्ना, सासंद अरुण सागर व महापौर अर्चना वर्मा का ब्रजेश पांडे, दिनेश मिश्रा, सईद खां, ओंकार मनीषी ने बुके भेंटकर स्वागत किया। कवि इंदु अजनबी के संचालन में हुए कार्यक्रम में बार एसोसिएशन के अध्यक्ष ब्रजेश वैश्य, सेना के ग्रुप कैप्टन प्रमोद गुप्ता, कैप्टन संजय कुमार, कर्नल जगलान, कर्नल विवेक श्रीवास्तव, अमित वर्मा, सुयश सिन्हा, अनिति त्रिवेदी, देवेंद्र गुप्ता, कमल शुक्ला शील, कवि अजय गुप्ता, अजफर अली खां, बाबर अली खां, अजय वर्मा, राजीव गुप्ता सहित तमाम गणमान्य लोग मौजूद रहे। अंत में सभी का आभार इम्तियाज अली खां ने वयक्त किया। इस मंत्री सुरेश खन्ना, सांसद अरुण सागर, महापौर अर्चना वर्मा ने गांधीजी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

मंत्री सुरेश खन्ना और महापौर अर्चना वर्मा ने मां सरस्वती और भारत माता के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया। विषय की स्थापना एस एस कालेज के इतिहास के विभागाध्यक्ष डा. विकास खुराना ने की।पुस्तक के लेखक विपिन बिहारी श्रीवास्तव ने पुस्तक के बारे में विस्तार से जानकारी प्रस्तुत की। बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष कमल

राष्ट्र के विकास के लिए समान नागरिक संहिता आवश्यकः स्वामी चिन्मयानंद

एसएस ला कालेज में राष्ट्रीय शैक्षिक जागरुकता संगोष्ठी का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन के अवसर पर स्वामी शुकदेवानंद विधि महाविद्यालय में 9 दिवसीय राष्ट्रीय शैक्षिक जागरूकता अभियान का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती ने कहा व्यक्ति की पहचान क्षेत्र, भाषा, जाति, धर्म, या व्यक्ति के आधार पर नहीं होनी चाहिए, बल्कि नागरिक के आधार पर होनी चाहिए।अब समय आ चुका है कि देश के सभी नागरिक विभाजित ना होकर, इंसानियत और मानवता के आधार पर राष्ट्र की उन्नति में अपना योगदान दें। मुख्य अतिथि रुहेलखंड विश्वविद्यालय के विधि संकायाध्यक्ष प्रो. अमित सिंह ने भारत अर्थात इंडिया शब्द के फर्क का संवैधानिक उल्लेख करते हुए यह बताया कि संविधान में भी भारत पहले और इंडिया बाद में आता है। सवाल भारत या इंडिया का नहीं है बल्कि किसी भी देश के

एकीकरण का है। समान नागरिक संहिता भी देश के एकीकरण की ओर एक सार्थक प्रयास है। विशिष्ट अतिथि अधिवक्ता अंशुमान मैसी ने कहा कि सिविल और आपराधिक विधियां भारत के हर व्यक्ति पर लागू होती हैं तो कुछ कानून- कुछ व्यक्तियों, कुछ राज्यों और कुछ क्षेत्रों के लिए अलग क्यों है? उद्घाटन सत्र का शुभारंभ स्वामी शुकदेवानंद सरस्वती के चित्र पर पुष्पांजलि एवं दीप प्रज्वलन से हुआ। प्रो. ए.के. मिश्रा ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि समान नागरिक संहिता भारत में नागरिकों के लिए एक समान कानून को बनाने और लागू करने का एक प्रस्ताव है। डॉ. अनुराग अग्रवाल के संचालन में हुए कार्यक्रम के अंत में लॉ कॉलेज के प्राचार्य डॉ. जय शंकर ओझा ने धन्यवाद ज्ञापित किया । इस अवसर पर डॉ.हरिशंकर गंगवार वरिष्ठ वैज्ञानिक इसरो डॉक्टर आरके आजाद प्राचार्य एसएस कॉलेज धर्मेंद्र महानगर कार्यवह, आकाश राठौर संगठनमंत्री विद्यार्थी परिषद, डॉ. अनिल कुमार शाह, डॉ. अमित कुमार यादव, डॉ. पवन कुमार गुप्ता तथा एस. एस. लॉ कॉलेज एवं एस. एस. कॉलेज के छात्र उपस्थित रहे।

हेल्पलाइन सोसाइटी के निशुल्क चिकित्सा शिविर में 525 लोगों की हुई जांच

एसपी अशोक मीणा व सीएमओ डा. आर के गौतम ने किया शुभारंभ

लोक पहल

शाहजहांपुर। हेल्पलाइन सोसाइटी व आईआईए के अध्यक्ष अशोक अग्रवाल की माँ विद्यावती अग्रवाल की पुण्यतिथि पर सोसाइटी की ओर से निशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ पुलिस अधीक्षक अशोक मीणा व सीएमओ डा. आरके गौतम ने किया। रुहेलखंड मेडिकल कॉलेज के डा. अशोक अग्रवाल व डा. अमिताभ सिंह के नेतृत्व में 25 चिकित्सकों की टीम ने लोगों की विभिन्न रोगों की जांच की व उचित

परामर्श दिया निशुल्क दवायें भी वितरित की गई। शिविर में करीब चार सौ लोगों की आंखों की जांच भी की गई तथा निशुल्क चश्मे भी दिये गये। साथ ही दिव्यांग जनों को वैसाखी, वाकिंग स्टिक व कान की मशीन प्रदान की गई। करीब 42 मरीजों के दांतों का इलाज किया गया। इस मौके पर एसपी अशोक मीणा ने संस्था के प्रयासों की सराहना की। कार्यक्रम में एडीएम डा. सुरेश कुमार, एसपी ग्रामीण संजीव बाजपेयी, संस्था के अध्यक्ष अशोक अग्रवाल, प्रहलाद राय अग्रवाल, सुरेश सिंघल, विनोद अग्रवाल, डा. अनिल त्रेहन, डा. संजीव कनौजिया, निर्मल अग्रवाल संजीता अग्रवाल, रवि गोयल, विकास अग्रवाल, शुभम खन्ना, दिव्यांग सिंघल, अंकित सिंघल आदि मौजूद रहे।

इंडियन स्वच्छता रैली दिया साफ-सफाई का संदेश

महापौर और नगर आयुक्त ने नगर को स्वच्छ रखने की अपील की

लोक पहल

शाहजहांपुर। नगर निगम शाहजहांपुर की ओर से महापौर अर्चना वर्मा व नगर आयुक्त सन्तोष कुमार शर्मा के नेतृत्व में स्वच्छता रैली का आयोजन किया गया। रैली का शुभारंभ खिरनीबाग स्थित बिस्मिल पार्क से हुआ और समापन अशफाक उल्ला खां की मजार पर किया गया। रैली से पूर्व महापौर अर्चना वर्मा व नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा ने बिस्मिल पार्क में पंडित रामप्रसाद बिस्मिल की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया । इसके उपरांत महापौर एवं नगर आयुक्त की अगुवाई में इंडियन स्वच्छता रैली निकाली गई। रैली सदर चौराहा, नगर निगम टाउन हॉल, कवि तिराहा, रोडवेज, महिला थाना होते हुए अमर शहीद अशफाक उल्ला खां की मजार पर समाप्त हुई। इंडियन स्वच्छता रैली के दौरान महापौर अर्चना वर्मा एवं नगर आयुक्त संतोष शर्मा ने सभी नगरवासियों से अपने नगर को साफ एवं स्वच्छ रखने, इधर उधर कचरा न फेकने, कचरे को एक उचित स्थान पर

डालने, वातावरण को शुद्ध रखने एवं प्रतिबंधित सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग न करके कपड़े के बने थैले का उपयोग करने की अपील की। इंडियन स्वच्छता रैली के समापन पर शहीद अशफाक उल्ला खां की मजार पर महापौर नगर आयुक्त अपर नगर आयुक्त एसके सिंह, सहायक नगर आयुक्त रश्मि भारती, कवि डॉ. इंदु अजनवी एवं शहीद अशफाक उल्ला खां के प्रपौत्र ने चादरपोशी की। इस दौरान नगर स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनोज कुमार मिश्रा, स्वच्छता प्रभारी अल्पना श्रीवास्तव विभिन्न विद्यालयों के शिक्षक ,बच्चे व नगर निगम के अन्य अधिकारी और कर्मचारी मौजूद रहे। इसके अतिरिक्त एक और स्वच्छता रैली मुमुक्षु आश्रम से गर्रा पुल स्थित गांधी पार्क तक निकाली गई। रैली का नेतृत्व नगर आयुक्त सन्तोष कुमार शर्मा ने किया । गांधी पार्क में रैली के समापन पर नगर आयुक्त व नगर निगम के अन्य अधिकारियों ने महात्मा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया।

सृजन की शक्ति के रूप में जाने जाते है भगवान विश्वकर्मा

शाहजहांपुर (लोक पहल)। विश्वकर्मा जयंती के अवसर पर एसएस कालेज के कम्प्यूटर विभाग की ओर से विश्वकर्मा पूजन का आयोजन किया गया। पूजनोपरांत भगवान विश्वकर्मा की महत्ता पर बोलते हुए प्राचार्य प्रो. आरके आजाद ने कहा विश्वकर्मा सम्पूर्ण विश्व में निर्माण करने वाली शक्ति के रुप में जाने जाते हैं। कंप्यूटर विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. संदीप अवस्थी ने कहा भगवान विश्वकर्मा हमें सृजन की शक्ति देते हैं, यह सृजन ही समाज को उत्तरोत्तर वृद्धि प्रदान कर रहा। डॉ. श्रीकांत मिश्रा ने कहा भगवान विश्वकर्मा के नाम का अर्थ है विश्व का करने वाला अर्थात संपूर्ण विश्व के निर्माण की शक्ति का नाम है विश्वकर्मा। इस अवसर पर एनएसएस प्रभारी डॉ प्रमोद यादव, डा. विजय तिवारी, राजेश सक्सेना, डॉ रजत, डॉ उमेश, डॉ सुमित, डॉ अनामिका शुक्ल, डॉ कविता, डॉ रामशंकर पांडे, विपुल दीक्षित एवं कमलेश त्रिवेदी सहित छात्र छात्राओं ने पूजन में सहभाग किया।

गाजे बाजे के साथ विराजे मठिया के महाराज

चौक में निकाली गई गणपति की शोभायात्रा

शाहजहांपुर (लोक पहल)। मठिया के महाराजा की स्थापना शोभायात्रा निकाली गई। अरुण रस्तोगी के बक्सरिया स्थित आवास से पूरे गाजे बाजे के साथ शोभायात्रा छोटा चौक, घूरन तलैया होती हुई चारखंबा पर शर्मा जी के डेरे गणेश पैलेस में पहुँची। पंडित राजीव मिश्रा ने वैदिक मंत्रोचार के साथ मूर्ति की स्थापना की गई।रास्ते में श्रद्धालुओं ने पुष्पवर्षा कर गणपति का स्वागत किया। शोभायात्रा में प्रमुख रूप से मनोज शर्मा, सोनू शर्मा, प्रदीप मल्होत्रा, अर्पित मेहरोत्रा, निश्चित मिश्रा, विमल कपूर, विमल, सुनील बंसल, अंकुर कटियार, मनोज अग्रवाल, विशाल कटियार, अमित कटियार, रोशन कनौजिया आदि उपस्थित रहे।शोभा यात्रा का संचालन समिति के प्रवक्ता सुचित सेठ ने किया ।

धरोहर

कई राज समेटे गोरा कब्रिस्तान

सुशील दीक्षित 'विचित्र'

पुवायां रोड, पुलिस लाइन से आगे बढ़िए, उल्टे हाथ की तरफ बुद्ध बिहार। बाई बाग कालोनी जहां से शुरू होती है उससे पहले एक नाला है और एक रास्ता सड़क से निकलकर अजदहे की तरह पश्चिम की ओर सरक जाता है जो निगोही रोड में विलीन हो जाता है। इस नाले से ठीक पहले एक मछली बाजार है और इस मछली बाजार के पीछे छिपा एक पुराने जमाने का फाटक और लंबी चहारदीवारी दोनों तरफ दूर तक चली गई है। पहले यहां मछली बाजार नहीं था तब एक ही नजर में पूरी की पूरी चहारदीवारी मय फाटक के आंखों के सामने नुमाया हो जाती थी। यह दरवाजा, यह चहारदीवारी 1858 की है।

पहली आजादी की लड़ाई से ठीक एक साल पहले की। होने को तो यह पहले की भी हो सकती है, लेकिन चहारदीवारी में लगी ईंट 1858 की है। इसलिए मेरा अनुमान इसके इसी साल निर्मित होने का है। अलबत्ता यह रहस्यमयी चहारदीवारी और फाटक, जब भी मैं इस सड़क से निकला, मुझे आकर्षित करता लगा। 199०-91 में मैंने अपने एक दो मित्रों से इसकी चर्चा की तो पता लगा कि यह गोरा कब्रिस्तान के नाम से जाना जाता है। मैं वहां उसी दौरान तब गया जब मैंने 1857 की क्रांति में शाहजहांपुर का योगदान तलाश रहा था और उसके चिन्ह तलाश रहा था।

हम गोरा कब्रिस्तान पहुंचे। इसके माथे पर एक बड़ा सा बोर्ड चस्पा था जिस पर उस स्थान के नाम की घोषणा की गई थी, मसीही कब्रिस्तान। फाटक के अंदर दो अंधेरे जर्जर कोठरी नुमा कमरे पार करके जब हम खुले में आए तो उतनी ही जर्जर एक वृद्धा चारपाई पर बैठी दिखीं। इनका हालचाल पूंछा तो उन्होंने बताया कि माली मर गया है। माली के मतलब यहां केयर टेकर से था। पूरा कब्रिस्तान झाड़ियों से भरा हुआ था। आधा दर्जन युवक लोहे के हॉकी नुमा रॉड लिए झाड़ियों से संघर्ष कर रहे थे। हम उत्तर की ओर से कब्रिस्तान को छानना शुरू किया। प्रारंभ में इसी सदी की कब्रे थीं जिन पर मृतक के बारे में लिखा था। झाड़ियां हटाते, कच्ची कब्रों को फलांगते हम पश्चिम की ओर बढ़े। एक बहुत ऊंची कब्र मिली जिस पर बहुत से नाम लिखे थे। इस सबकी मृत्यु 19०2 में हुई थी। 19०2 की बहुत सी कब्रें थी। कुछ सामूहिक थी, कुछ एकल। एक सामूहिक कब्र युद्ध बंदियों की थी।

दरअसल 19०2 में प्लेग, मलेरिया जैसी महामारियां फैली थीं जिनमें हजारों लोग मर गए थे। कई अंग्रेज सैन्य अफ सरों के परिवार के परिवार ही साफ हो गए थे, जैसे कोरोना में हो गए। कई कब्रों पर अंग्रेज अफ्सरों के पूरे परिवार को एक साथ एक ही कब्र में दफ्नाया गया।

पत्थर धूलधक्कड़ में इतने मैले थे कि पढ़ने में नहीं आ रहे थे। मैंने कब्रों को साफ करना शुरू किया। कई कब्रों पर पत्थर बहुत खूबसूरत बने थे। हमने डेढ़ घंटे में एक तरफ का पूरा हिस्सा छान मारा, लेकिन मैं जिस कब्र की तलाश में आया था वह मुझे नहीं मिली। 199० में जब मैं यहां आया था तब एक कब्र पर फैक्ट्री के पुराने वाले गेट का नक्शा बना था और वह 1914 की वह कब्र शायद वर्तमान ओसीएफ के प्रारंभिक प्रबंधक की थी। एक और चीज थी जो मैंने तब देखी थी जब मैं पहली बार यहां आया था। तब बच्चों की हर कब्र पर नाइट एंजिल्स की सफेद संगमरमर की डेढ़ फुट ऊंचीं बहुत सी मूर्तियां लगी थी। एक हाथ में मशाल थामें यह श्वेत परियां कब्रिस्तान की खौफनाक सन्नाटे की मुस्कान थीं। वह सब गायब थीं। चोरों ने न केवल कई कब्रें खुर्दबुर्द कर डालीं थीं, बल्कि कई कब्रों पर लगे पत्थरों को भी निकाल ले गए थे। उत्तर के हिस्से से निपटकर हमने दक्षिण की ओर रुख किया। यहां भी घनी झाड़ियां थीं। मीठे नीम की आदमी से भी ऊंची झाड़ियां। उनके बीच दुबकी हुई कब्रें। कहीं झाड़ियां हटाईं कहीं पैर से दबाईं, कहीं उखाड़ीं। एक कब्र पर एक गार्ड का नाम लिखा था जो रेलवे में था। 1878 की इस कब्र पर शाहजहांपुर से गुजरने वाली रेलवे लाइन का नाम लिखा था अवध रुहेलखंड रेलवे। एक कब्र 1862 की थी, लेकिन सबसे पुरानी कब्र एक बच्चे की है जो 186० में अल्पायु में ही मर गया था। एक कब्र रोजा कंपनी के अधिकारी की 1888 की है। 19०2 की तरह 1876 की भी बहुत सी सामूहिक और एकल कब्रे हैं। यह लोग भी महामारी में मारे गए थे। 199 में मुझे ऐसे कब्रिस्तान की तलाश थी जिसमें 1857 में मारे गए लोग दफन हों। काफी खोज के बाद तब मुझे कैंट में जाने वाले रेलवे लाइन से पश्चिम की ओर तिकुनियां कब्रिस्तान मिला था जो बिना चहारदीवारी का था और अपना अस्तित्व खो चूका था। दो चार कब्रे दिखती थीं और एक दो पत्थरों के निशान भी थे। अब वहां पेड़ खड़े हैं। जीएफकालेज के सामने वाला चर्च 1854 में बना था। इसके पीछे एक बड़ी सामूहिक समाधि बनी है जिस पर 1857 की क्रांति के दौरान चर्च में मारे गए अफ्सरों के नाम लिखे हैं।

एसएस लॉ कालेज में रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन

आकृति, यश भारती व ज्ञानेन्द्र बने विजेता

लोक पहल

शाहजहांपुर। एसएस लॉ कालेज में रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतिभागियों ने रंगों के संयोजन से सुंदर कलाकृतियों को उकेरा। निर्णायक मंडल में डॉ. विनीता राठौर, डॉ. अंजूलता अग्निहोत्री तथा डॉ. प्रांजल पुंडीर शामिल रहे।

प्रतियोगिता में प्रथम स्थान आकृति बी.ए.एल-एल.बी. प्रथम सेमेस्टर, द्वितीय स्थान यशभारती एल-एल.बी. पंचम सेमेस्टर एवं तृतीय स्थान ज्ञानेंद्र सिंह बी.ए.एल-एल.बी. प्रथम सेमेस्टर को प्रदान किया। अंत में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. जयशंकर ओझा ने प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी छात्र-छात्राओं का उत्साहवर्धन करते हुए उपस्थित निर्णायक मंडल के प्रति आभार ज्ञापित किया। प्रतियोगिता का संचालन महाविद्यालय की

प्राध्यापिका डॉ. दीप्ति गंगवार, डॉ. ज्योत्स्ना गुप्ता, सुश्री अपर्णा चौहान ने किया। इस अवसर पर डॉ. अनिल कुमार शाह, डॉ. अमित कुमार यादव, प्रियंक वर्मा, अमित सैनी, गौरव गुप्ता आदि उपस्थित रहे।

/ सम्पादकीय /

क्या मूर्तरूप ले पाएगा नारी वंदन अधिनियम ?

राजनीति में महिलाओं की हिस्सेदारी उचित अनुपात में हो सके इसके लिए काफी समय से प्रयास चल रहे हैं लेकिन यह प्रयास किसी ठोस नतीजे पर पहुंचने में अब तक नाकाम रहे हैं। राजनीति में महिलाओं की हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए 2०1० में महिला आरक्षण बिल तत्कालीन कांग्रेसनीति सरकार ने सदन में लाया था लेकिन राज्यसभा से बिल पास होने के बाद लोकसभा में अटक गया। सड़कों पर महिलाओं की हिस्सेदारी की पैरवी करने वाले तमाम दल सदन में बिल के विरोध खड़े दिखाई दिए। काफी समय से यह अपेक्षा की जा रही थी कि राजनीतिक दल खुद महिलाओं को राजनीति में आगे लाएं और वे अपने दम पर अपनी जगह बनाएं। मगर यह विचार व्यावहारिक रूप लेता नहीं दिख पाया, तो सिफारिश की गई कि लोकसभा और विधानसभाओं में महिलाओं के लिए एक तिहाई सीटें आरक्षित कर दी जाएं।

इसे लेकर मसविदा भी तैयार हुआ। संसद में उसे कानूनी दर्जा दिलाने की भी कोशिशें होती रहीं, मगर विभिन्न राजनीतिक दलों के विरोध के चलते इसे अमली जामा नहीं पहनाया जा सका। पिछले सत्ताईस सालों से यह विधेयक अधर में झूल रहा है। अब सरकार ने एक बार फिर इसे लोकसभा में पारित कराने का मन बना लिया है। विधेयक सदन में पेश कर दिया गया है। अगर इसे कानूनी दर्जा मिल गया तो लोकसभा में महिला सदस्यों की संख्या बढ़ कर एक सौ इक्यासी हो जाएगी। फिलहाल उनकी संख्या बयासी है। इसी तरह विधानसभाओं में भी महिलाओं की भागीदारी बढ़ जाएगी। प्रस्तुत विधेयक को केवल पंद्रह सालों तक लागू रखने का प्रस्ताव है। इसके बाद नए सिरे से इसे सदन में पारित कराना पड़ेगा। लोकसभा में सरकार मजबूत स्थिति में है, इसलिए इस विधेयक के पारित होने में कोई अड़चन महसूस नहीं की जा रही। राज्यसभा में यह पहले ही पारित हो चुका है। कोई भी दल महिला आरक्षण के विरोध में कभी नहीं रहा है, बस मतभेद इसके मसविदे के बिंदुओं को लेकर उभरते रहे हैं। नए विधेयक में महिलाओं के लिए तय तैंतीस फीसद आरक्षण के भीतर अलग-अलग वर्गों की महिलाओं के लिए आरक्षण तय करने के बजाय लोकसभा और विधानसभाओं में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की खातिरआरक्षित सीटों में से ही तैंतीस फीसद महिलाओं के लिए आरक्षित करने का प्रस्ताव है। इसके अलावा अगर आरक्षित सीटों से बाहर भी महिलाएं चुनाव लड़ना चाहें तो लड़ सकती हैं। हालांकि अन्य पिछड़ी जातियों के लिए किसी प्रकार के आरक्षण की व्यवस्था नहीं है, इसलिए असल विरोध का स्वर वहीं से उठता रहा है।

दरअसल, महिला आरक्षण का मकसद विधायिका में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना है, इसलिए कुछ लोगों का विचार यह भी रहा है कि महिलाओं को आरक्षण के जरिए ही क्यों आगे आने का अवसर मिलना चाहिए, उन्हें अपने दम पर आगे आने का मौका देना चाहिए। महिला आरक्षण विधेयक अगर संसद में पारित हो जाता है तो यह निस्संदेह एक ऐतिहासिक कदम होगा, मगर उसके बाद भी यह देखना होगा कि राजनीतिक दल महिलाओं को संगठन में कितनी अहम जगह देते हैं। भाजपा सरकार ने सदन में नारी शक्ति वंदन अधिनियम का बिल पेश तो कर दिया लेकिन यह बिल मूर्त रूप ले पाएगा और देश की आधी आबादी को राजनीति में उचित हिस्सेदारी मिल पाएगी इसमें काफी संदेह है। बिल से पहले न तो जनगणना कराई गई है और न ही सरकार के पास कोई जातिगत डाटा है। ऐसे में यह माना जा रहा है कि बिल पास होने के बाद भी इसको मूर्त रूप लेने में करीब 5 से 6 वर्ष का समय और लग सकता है इस चिंता को सदन में कांग्रेस की नेता सोनिया गांधी ने भी उठाया है। उन्होंने कहा कि सरकार को यह बताना चाहिए कि आखिर यह बिल कब मूर्त रूप ले सकेगा या केवल एक बार फिर महिला आरक्षण केवल एक जुमला बनकर ही रह जाएगा।

भारत माता का जयघोष 'मेरी माटी–मेरा देश'

डा. कनक रानी
पूर्व प्राचार्य

मेरी माटी, मेरा देश कार्यक्रम राष्ट्रीयता के मुखर अभिव्यक्ति है। यह देश प्रेम का उद्घोष है। मातृ वंदना का उत्सव है। स्वतंत्रता को अक्षुण्ण रखने की प्रेरणा है। राष्ट्र सेवा का संदेश है। राष्ट्र रक्षा का दायित्व है। राष्ट्र प्रगति का संकल्प है। विश्व गुरु की संकल्पना है। यह अमर शहीदों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का अवसर है जिन्होंने स्वतंत्रता के यज्ञ में आत्मोत्सर्ग कर स्वतंत्रता का स्वर्णिम इतिहास रच दिया। भारत मां की परतन्त्रता को ध्वस्त करने वाले, अपने प्राणों का मोह त्यागने वाले ज्ञात-अज्ञात क्रांतिकारियों को सश्रद्ध स्मरण और नमन करने का अवसर है।

वैदिक साहित्य में मातृ प्रेम की रसधार हृदय को सराबोर करती हुई दिखाई देती है- माता भूमि: पुत्रो अहम् पृथिव्या:। भूमि मेरी माता है और मैं पृथ्वी का पुत्र हूं। इस आदर्ष को आज आत्मसात करने की जरूरत है। प्रत्येक नागरिक इस भाव को स्वयं जिए और दूसरों को भी प्रेरित करे। यह कार्यक्रम हर भारतवासी के हृदय को राष्ट्रीयता से- भारतीयता से ओतप्रोत करता है कि हमारे देश की मिट्टी सर्व=सम्मान्य है। अलग-अलग स्थानों से एकत्रित मिट्टी एकरूपता को धारण कर लेती है। इसी प्रकार पृथक् पृथक् प्रदेशों की भौगोलिक, सांस्कृतिक, नैतिक, ऐतिहासिक विशिष्टता, राष्ट्रीय वैभव की कारक बन जाएं, राष्ट्रीय एकता की संवाहक बन जाएं। अनेक पुत्रों में विभिन्नताओं के पश्चात् भी मां का हित सर्वोपरि रहता है, इसी प्रकार हम समस्त राष्ट्रवासी भारत माता के हित को सर्वोच्चता/सर्वोत्कृष्टता प्रदान कर गर्व की अनुभूति करें।

इस दिषा में राष्ट्रीय सुस्थिरता, सुदृढ़ता, अखण्डता एवं एकता के लिए पंचप्रण अर्थात् विकसित भारत का लक्ष्य, गुलामी की हर अंश से मुक्ति, अपनी विरासत पर गर्व, एकता और एकजुटता एवं नागरिकों में कर्तव्य भावना अपरिहार्य हैं। देश- हित में नि:स्वार्थ सेवा करना देश प्रेम को परिभाषित करता है। राष्ट्र के हितार्थ जीवन में प्रति पल समर्पण की अपेक्षा है। हमारी किसी भी गतिविधि से राष्ट्रविकास बाधित न हो, इस ओर भी सावधानी वांछित है। प्रत्येक व्यक्ति यदि अपने- अपने क्षेत्र में निष्ठापूर्वक कार्य का संपादन करता है तो परोक्ष रूप से राष्ट्रोन्नति में योगदान देता है। राष्ट्र के अभ्युत्थान की लक्ष्य सिद्धि में राष्ट्र प्रेम की भावना और तदनुसार गति दोनों का ही विशेष स्थान है। जातीय तथा साम्प्रदायिक द्वेष से मुक्त होकर सहअस्तित्व को प्रमुखता देकर राष्ट्र प्रेम की सरस धारा को अविरल बनाया जाए। व्यक्तिगत लाभ को परे रखकर शांति, सद्भाव और सहयोग को बढ़ावा दिया

जाए। हमारा चिन्तन, हमारी भूमिका राष्ट्रहित के निमित्त हो। निश्चय ही, देशप्रेम वह तत्व है जिसमें हर बाधा को पार करने हेतु अदम्य साहस और शक्ति होती है। यही तत्व देश को वैश्विक ऊंचाइयों का संस्पर्श कराने में भी साधक बन सकता है। मातृ भूमि के प्रति समर्पण, कर्मशीलता का संकल्प, समस्याओं से जूझने की शक्ति, विकास के कार्यों में उत्साह, अहितकारी तत्वों से सतर्कता जरूरी है। स्मरणीय है कि नारी जगत का सषक्त सहभाग भी देश की सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक स्थितियों में अनुकूलता लाने में प्रभावी है।

वैश्विक प्रतिस्पर्धाओं तथा चुनौतियों का सामना करने के लिए आत्मनिर्भरता की नीति प्राथमिकता पर होना चाहिए। इस संदर्भ में जनचेतना की प्रबल अपेक्षा है। अत: शिक्षा, औद्योगिक क्षेत्र, वैज्ञानिक कृषिकर्म, चिकित्सीय शोध, तकनीकी क्षेत्र में गतिशीलता अपेक्षित है। आवश्यक वस्तुओं का अपने देश में ही निर्मित किया जाना आर्थिक स्थिति को सुधारने तथा आत्मनिर्भर बनने की दिशा में महत्वपूर्ण बिंदु है। शिक्षा के माध्यम से ग्रामीण स्तर पर विकास का लक्ष्य पूरा किया जा सकता है। भारतीय संविधान में निष्ठा, लोकतन्त्र में आस्था, भारतीय संस्कृति के प्रति सम्मान, राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति सजगता, देश की समृद्धि के प्रति जागरूकता, सामाजिक सुधार हेतु चेतना, इन सबके प्रति प्रत्येक नागरिक सचेत और सचेष्ट हो।

एक श्रेष्ठ नागरिक के सर्वोच्च भाव अपने राष्ट्र के लिए होने चाहि,। अपने कर्तव्यों का निर्वाह कर ही देष को गतिशील किया जा सकता है। राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में युवा वर्ग की विशेष भूमिका है। स्वार्थपरता को तिलांजलि देते हुए राष्ट्रीय विकास को लक्षित करना जरूरी है। युवाओं की सकारात्मक रूप से एकजुटता राष्ट्र के सशक्तिकरण में सहायक है। सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं का निराकरण करने के लिए नई पीढ़ी से अपनी संरचनात्मक शक्ति, तकनीकी क्षमता एवं प्रयोगात्मक कार्य कौशल की अपेक्षा की जाती है। ध्यातव्य है कि वयोवृद्ध एवं ज्ञानवृद्ध नेतृत्व में युवा भागीदारी राष्ट्र को विश्वगुरु बनाने की दिशा दिखा सकती है।

हमें अपनी सांस्कृतिक संपदा पर गर्व होना चाहिए। हमारी संस्कृति विश्व वरणीय है। इसमें संकीर्णता का कोई स्थान नहीं। यहां सर्वजनहित का आदर्श है। समग्र मानवता के प्रति सद्भाव है। सकल देशवासी सांस्कृतिक मूल्यों तथा राष्ट्रीय भावों से अनुप्राणित हों, प्रारम्भिक काल से ही ऐसे प्रयास वांछित हैं।

जीवन की उत्पत्ति

हन्नान
शाहजहांपुर

खगोलीय दुर्घटनाएँ सबसे पहले पृथ्वी सूर्य से इतनी दूरी पर एक कक्षा में उत्पन्न हुई या उसमें बस गई अपने निश्चित वातावरण को विकसित करने के बाद तापमान ने पानी को अधिकांश समय सतह पर तरल अवस्था में मौजूद रहने की अनुमति दी यह एक लौकिक दुर्लभता होनी चाहिए लेकिन जैसा कि हम जानते हैं यह जीवन की उत्पत्ति के लिए बेहद महत्वपूर्ण थी दूसरा पृथ्वी की घूर्णन धुरी सूर्य के चारों ओर अपनी परिक्रमण के तल से सामान्य से दूर झुकी हुई है नि:संदेह यह दुर्घटना ऋतुओं के अस्तित्व के लिए जिम्मेदार है और इस प्रकार विभिन्न अक्षांशों में क्षेत्रों के बीच के अंतर को काफी हद तक बढ़ा देती है किसी प्रकार की एक अन्य खगोलीय दुर्घटना ने पृथ्वी को एक चंद्रमा प्रदान किया जो महासागरों के विकसित होने के बाद एक अंत:ज्वारीय क्षेत्र के अस्तित्व के लिए जिम्मेदार था जहां जीव अनुकूलित हो गए समुद्र पानी से बाहर जीवन के प्रति सहनशील बन सकता है और इसलिए भूमि पर उपनिवेश बनाने के लिए तैयार रहें वर्तमान अनुमानों के अनुसार पृथ्वी की उत्पत्ति भले ही लगभग 4.5 अरब वर्ष पहले हुई हो लेकिन जिन सभी सिद्धांतों से मैं परिचित हूं वे इस बात से सहमत हैं कि एक समय में इसका तापमान इतना अधिक था कि वातावरण बनाए रखना संभव नहीं था गैसें जो अब मौजूद हैं ऑक्सीजन संभवत: हाइड्रेटेड सिलिकेट और धात्विक ऑक्साइड में बंधी हुई थी और नाइट्रोजन कार्बन और फास्फोरस नाइट्राइड कार्बाइड और फॉस्फाइड के रूप में बंधी हो सकती हैं जो आज उल्कापिंडों में पाए जाते हैं लेकिन जो एक में अस्थिर हैं ऑक्सीजन और जलवाष्प युक्त वातावरण सबसे पुरानी ज्ञात चट्टानें ज्वालामुखीय गतिविधि का सबूत दिखाती हैं और मैं रूबे 1951के निष्कर्ष को स्वीकार करता हूं कि वायुमंडल और जलमंडल की उत्पत्ति पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के लिए सतह के पर्याप्त रूप से ठंडा होने के बाद पृथ्वी के आंतरिक भाग में चट्टानों के क्षरण से हुई है जलवाष्प और अन्य हल्की गैसों को बनाए रखने के लिए क्षेत्र मुझे यह भी संदेह करने का कोई कारण नहीं दिखता कि आदिम वायुमंडल मुक्त ऑक्सीजन की कमी वाला एक कम करने वाला वातावरण था क्योंकि हम जानते हैं कि आज स्थलमंडल की सतही परतों में केवल लोहे और मैग्नीशियम के पर्याप्त रूप से कम किए गए यौगिक हैं जो सभी ऑक्सीजन को निकालने के लिए हैं भूवैज्ञानिक रूप से बहुत ही कम समय में वातावरण क्या यह प्रकाश संश्लेषण के लिए नहीं था चाहे आदिम वातावरण हो जैसा कि ओपेरिन 1936 द्वारा प्रतिपादित किया गया था अमोनिया हाइड्रोजन मीथेन और पानी से मिलकर बना एक दृढ़ता से कम करने वाला था और बाहरी ग्रहों के वायुमंडल पर टिप्पणियों नाइ-पर 1951 और मिलर के प्रयोगों द्वारा समर्थित था 1953 या क्या यह केवल कमजोर रूप से कम हो रहा था जैसा कि रुबे 1955 ने बताया था हमें यहाँ चिंता करने की जरूरत नहीं है एबेल-सन 1957 ने प्रयोगात्मक रूप से दिखाया है कि विद्युत निर्वहन ऑक्सीकृत कार्बन यौगिकों वाले कमजोर रूप से कम करने वाले गैसीय मिश्रण में अमीनो एसिड के संश्लेषण को प्रेरित कर सकता है जब तक कि मुक्त हो हाइड्रोजन मौजूद है अधिक दृढ़ता से कम करने वाले वातावरण में मिलर ने अमीनो एसिड एल्डिहाइड कार्बनिक एसिड और यूरिया का एक जटिल मिश्रण प्राप्त किया इसमें कोई शक नहीं कि विद्युत् निर्वहन आदिम वातावरण में होता था और अधिक महत्वपूर्ण पराबैंगनी विकिरण में होता था प्रति क्वांटम उच्च ऊर्जा सामग्री वायुमंडलीय ऑक्सीजन की अनुपस्थिति में पृथ्वी की सतह तक पहुंच जाएगी और अपरिचित रासायनिक प्रतिक्रियाओं को प्रेरित करेगी पृथ्वी के आदिम ठोस पदार्थ में कार्बाइड नाइट्राइड और फॉस्फाइड मौजूद थे या नहीं वे उल्कापिंडों में आए होंगे और पानी के साथ प्रतिक्रिया करके हाइड्रोकार्बन और जैविक रुचि के अन्य यौगिकों का उत्पादन किया होगा

इसलिए आदिकालीन समुद्र धीरे-धीरे कार्बनिक यौगिकों का एक पतला सूप बन गया जिसके बारे में उरे 1952 का अनुमान है कि यह 1: की सांद्रता तक पहुँच गया होगा अमीनो एसिड आसानी से पोलीमराइज हो जाते हैं और जब तक हम अनुमान लगाने में जितना समय लगाते हैं इन परिस्थितियों में उत्पन्न होने वाले पॉलीपेप्टाइड्स या यहां तक कि आदिम प्रोटीन की कल्पना करना मुश्किल नहीं है कई लेखकों ओपेरिन, 1936 ने मिट्टी के कणों पर सोखने जैसे तंत्रों के माध्यम से बड़े कार्बनिक परिसरों की संभावित उत्पत्ति पर चर्चा की है और इन अटकलों को यहां दोहराने की कोई आवश्यकता नहीं है। इस जटिल आदिम सूप में क्षणिक रूप उत्पन्न हो सकते हैं जो उन कुछ गुणों को प्रदर्शित करते हैं जिन्हें हम जीवन से जोड़ते हैं उदाहरण के लिए अणुओं को साफ करके अन्य अणुओं को ग्रहण करके बड़े समुच्चय का निर्माण करना और शायद उन्हें कुछ सरल तरीके से चयापचय करना यह भी संभव है कि कुछ आदिम फोटो-सिंथेटिक प्रक्रिया उत्पन्न हुई हो क्योंकि 2 नैनोमीटर से कम तरंग दैर्ध्य पर फेटॉन में एक-चरणीय फोटोकैमिकल प्रतिक्रिया के रूप में सीओ और जल को कार्बो हाइड्रेट करने के लिए पर्याप्त ऊर्जा होती है। हालाँकि ऐसी प्रक्रिया स्वयं-पराजित होगी क्योंकि कुछ विकसित ऑक्सीजन सूर्य के प्रकाश द्वारा ओजोन में आयनित हो जाएगी जो कि प्रतिक्रिया है।

धब्बा लगना

डा. पूर्णिमा श्रीवास्तव
जयपुर

हमारे समाज में अक्सर कुछ ऐसी छोटी मोटी गलतियां जो उस समाज के लोगों की मान्यतानुसार स्वीकृत नहीं होती उनके द्वारा गलती करने वाले व्यक्ति पर यह आपेक्ष लगाते पाया जाता है कि तुम्हारे कृत से फ्लाने के नाम को, हमारी इज्जत पर धब्बा लगा दिया। ऐसे दोषारोपण का प्रत्येक व्यक्ति कभी न कभी कहीं न कहीं अपने जीवन में अवश्य अनुभव करता है और कई बार इस तरह के दोषारोपण से इतना ज्यादा हतोत्साहित और निराश हो जाता है कि कई परिस्थितियों में वह अत्यधिक तनावग्रस्त हो जाता है। आज अपने लेख के माध्यम से इस धब्बा लगना जैसे कथन के मानव जीवन पर पड़ रहे दुष्यप्रभाव को समझने का प्रयास करेंगे, आखिर क्या है ये धब्बा? और इन धब्बों के लिए जिम्मेदार कौन है? समाज, संस्कृति, परिवार, माता पिता, पड़ोसी, दोस्त, या अन्य रिश्तेदार अथवा वातावरण और परवरिश? कहां से आए ये धब्बे, जो मानव जाति पर अपनी अमिट छाप छोड़ जाते हैं जिन्हें अच्छे से अच्छा डिटर्जेंट भी मिटा नहीं पाता और जैसे जैसे ये धब्बे जगजाहिर होते जाते हैं वैसे वैसे धब्बे लगे व्यक्ति का जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। कुछ लोगों को धब्बा लगने के पूर्व ही इतना तनाव डर रहता है कि उनके द्वारा किया गया कार्य कहीं धब्बा लगने की श्रेणी श्रृंखला का तो नहीं, इस सोच की वजह से ही वह अपने मनमाफिक जीवन यापन नहीं कर पाते कि कहीं उनका मनमाफिक कार्य उनके जीवन पर धब्बा न लगा दे और फिर पता नहीं कौन कौन से कैसे कैसे ताने, फटकार, जगहसाई, हीनता घृणा जैसी परिस्थितियों का सामना न करना पड़ जाएं। और इसलिए यह डर और तनाव उन्हें खुलकर जीवन न जीने पर मजबूर कर देता है और हमारा स्वछंदता पूर्ण जीवन पर बंदिशों की लगाम लग जाती। क्या यह सारी परिस्थितियां, बंदिशें मानव जीवन को एक सही विकास या दिशा देने में कारगर हो सकती है? नहीं,यह मानव विकास के लिए अवरोधनात्मक स्थिति है। मानव विकास विषेशज्ञ होने के नाते जब मैं इन सब स्थितियों का बारीकी से अवलोकन करती हुं तो मुझे लगता है कि यह मानव विकास को सही दिशा प्रदान न कर पाने में सबसे ज्यादा हानिकारक कारक है क्योंकि यह परिस्थितियां विकास की प्रारंभिक अवस्था में इतना अवरोध उत्पन्न कर देती है कि जन्म के पश्चात से ही यह परिस्थितियां मनुष्य की सोचने समझने की शक्ति को क्षीण करने में अपनी मुख्य भूमिका का निर्वाहन करना प्रारंभ कर देती है और एक स्वछंदता पूर्ण जिस जीवन की कल्पना मानव जाति से अपेक्षित हैं वह सिर्फ एक कोरी कल्पना मात्र बनकर रह गई है और इस बाधित जीवन के साथ मानव जाति का पूर्ण और सार्थक विकास की ओर विकसित करना असम्भव कार्य करने के समान है क्योंकि जब तक मानव ही अपने सही विकास के चरणों से अनजान है वह इसकी सही दिशा में कार्य करने को प्रेरित ही नहीं होगा जबतक इन परिस्थितियों के भयानक परिणामों से उसका अनुभव नहीं हो जाता और उस समय तक मानव विकास कितना गर्त में जा चुका होगा यह एक भयानक दु:स्वप्नन की तरह ही है क्योंकि अभी तो भेड़ चाल से जीवन जीने की प्रवृत्ति ही लोगों में व्याप्त है अभी इन्हें अपने अच्छे बुरे का न भान है उनके जीवन में कोई ऐसा मार्ग दर्शक जो उन्हें उनकी क्षमता, शक्ति, और विकास के चरणों से अवगत करा उन्हें सही ज्ञान, शिक्षा और जागरूकता उत्पन्न कर सकें। आज हर एक मानव बस स्वयं के दामन को उन धब्बों या लग सकने वाले धब्बों (जिनका आज के समय उतना महत्व नहीं हैं।)से बचाव में ही और उनके दोषारोपण- प्रत्यारोपण में ही व्यस्त हैं और दिन-प्रतिदिन इन धब्बों से स्वयं का बचाव करते हुए उन नए धब्बों से अपने दामन को रंगे जा रहा है जिनके इन धब्बों से भी ज्यादा भयानक परिणाम है। विचारणीय है आने वाले समय में मानव विकास किन मानदंडों पर आधारित होगा? क्या उन मानदंडों के अनुसार यह कह पाना सरल होगा कि हम मानव है?

खुद्दारी

शीला श्रीवास्तव, इंदौर

शहर दिवाली की रोशनी से नहाया हुआ था। मैं पति के साथ दिवाली की खरीदारी करने बाजार आई थी। एक बच्चा आवाज लगा रहा था, 'ले लो, दस के बारह दीये ले लो।' मेरे पति को उस गरीब बच्चे पर दया आ गई। उन्होंने मुझसे उस बच्चे से दीये खरीदने के लिए कहा तो मैंने उस बच्चे से कहा, 'दस रुपए के बीस के हिसाब से लगा दो, तुम्हारे दीये कुछ खास नहीं है।' मैं मुंह बनाकर उस बच्चे से बोली। 'नहीं हो पायेगा मैडम जी।' बच्चे ने सपाट स्वर में कहा। 'अरे ले भी लो। कितना भाव-ताल करती हो।' पति ने कहा तो मैंने पचास दीये ले लिए, और पैसे देकर हम आगे बढ़ गए, तभी उस बच्चे ने आवाज दी। 'अब क्या है ? मैंने पूरे पैसे दे दिए थे। 'मैं चिढ़कर बोली। 'साहब का मोबाइल पैसे निकालते समय गिर गया था। वहीं देने आया हूं।' बच्चा मासूमियत से बोला। बच्चे की इमानदारी देखकर हम दोनों स्तब्ध रह गए थे। जो बच्चा एक पैसा कम करने को तैयार नहीं था, वह मोबाइल लौटाने चला आया। 'यह लो मिठाई खा लेना।' मेरे पति सौ का एक नोट उसे देते हुए बोले। 'इसकी कोई जरूरत नहीं है साहब। हम मेहनत की खाते है' कहकर वह बच्चा चला गया। उसकी खुद्दारी देखकर हम चकित रह गए।

परेशान लोग

जी हाँ
हम उन लोगों में से हैं
जो अपनी गेयता ढूँढ-ढूँढकर
सारी उम्र परेशान रहे

परेशान रहे
फूलों पर पहले वाली
ओस न दिखने की वजह से
बिन्दी वाले शीशों पर
धूल जमने से
किसी भी नियम में
चोटें गिने जाने का इंतजाम न होने के कारण

परेशान रहे
मानो हमारे सपने
किसी मुँगरी से पीट दिये गये हों
मानो कोई बेखौफउखाड़ रहा हो
हमारे दरवाजों की साँकल
मानो हर सड़क
गाड़ियों से पान थूकने के लिए बनी हो

परेशान रहे
जैसे हमीं को बचानी थी
गुलमोहर की वाटिकाएँ
जैसे हमीं को रखने थे
दुनिया-भर की झाड़ियों में जुगनू
जैसे हमारे पानी न रखने से
प्यास से अचेत हो सकती थी
पखेरुओं से भरी यह पृथ्वी

परेशान रहे
गोया हमारे बाद लोग
कविता पढ़ना छोड़ देंगे
गोया हमारी अनुपस्थिति में
दृष्टियाँ पत्थर के टुकड़ों जैसी हो सकती हैं
गोया हमारे चले जाने पर
कोई किसी को मुस्कराकर
गुलाब न दे पाये शायद।

सत्येन्द्र कुमार रघुवंशी, लखनऊ

सड़क की पीड़ा

मैं ने सुनी हैं उसकी आहटें
मौन पीड़ा और अकुलाहटें
वह बिलखती और तड़पती भी है
आँसूओं से नहाती भी है
लेकिन...
उसकी आवाज मौन है
क्योंकि वह एक सड़क है !
अब वह अकेली है
उजड़ गए हैं उसके श्रृंगार
विस्तार के लिए काट दिए गए पेड़
वह अब नंगी और बेजान है
क्योंकि...
उसका अपनापन लूट गया
अब गर्म सूरज उसे पिघलाएगा
बारिश उसे भिगोएगी
वाहनों की चोट से वह घायल होगी
अपना सुख-दु:ख भी नहीं बाँट पाएगी
क्योंकि...
विस्तावाद में उसने अपनों को खो दिया
अब धूप में पिघलना, बारिश में भींगना
गर्मी से जलना और ठंड में सिकुड़ना
उसकी नियति होगी
क्योंकि...
उसका अपनापन लूट गया ?

प्रभुनाथ शुक्ला, भदोही

हरितालिका तीज व्रत

रानी प्रियंका वल्लरी हरियाणा

हरितालिका तीज वस्तुत: तपस्या का आभार छंद है। हरितालिका तीज व्रत की कथा माता पार्वती और भगवान भोलेनाथ से जुड़ी हुई है। इस व्रत में मुख्य रूप से से भगवान शंकर की पूजा होती हैं।
ये व्रत अखंड सौभाग्य और पति की दीर्घायु के लिए रखी जाती हैं। हरितालिका तीज व्रत भाद्रमास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को रखा जाता है। पौराणिक कथा के अनुसार महाराज दक्ष के द्वारा किए यज्ञ में जब माता सती से अपने पति का अपमान बर्दाश्त नही कर पाई।और यज्ञ की हवन कुंड में कूद कर आत्मदाह कर ली। अगले जन्म में राजा हिमाचल की पुत्री पार्वती के रूप में जन्मी। राजा हिमाचल अपनी पुत्री का व्याह भगवान विष्णु से करना चाहते थे।माता पार्वती भगवान शिव को अपना पति मन ही मन मान चुकी थी। अपनी मनोदशा माता पार्वती अपनी सखियों के साथ व्यक्त की थी,सखियों ने उन्हें मदद करने के लिए हरण कर जंगल में ले जाती है।इसी कारण से इस व्रत का नाम हरितालिका तीज व्रत रखा जाता है। जंगल में माता पार्वती भगवान शिव की मिट्टी की प्रतिमा बनाकर तपस्या करने लगी। भगवान शिव उनकी तपस्या से खुश होकर उन्हें पत्नी के रूप में स्वीकार किया।
इस व्रत में हमारी संस्कृति की कविता गूँथी हुई है।एक तरह की ध्यानमग्नता। इसका अमृत फल है -संबंधों का संचयन,राग भरे संबंधों की प्राप्ति का संवेदनशील शिल्प। ये व्रत निर्जला होता है।इसका अर्थ है -स्वंय में ही तरलता खोज ली जाए। इस व्रत में ऋतु फल का ही नैवेध चढ़ाया जाता है।मान्यता है इस व्रत में सामा की सत्तू का बड़ा ही महत्वपूर्ण माना गया है।माता पार्वती जहाँ तपस्या कर रही थी,वो एक जंगल था, जंगल की झड़ियों में यही सामा पौधे ही मिलते थे जिसे नैवेद्य के रूप में माता पार्वती भगवान भोलेनाथ को चढ़ाती थी। इस व्रत में रात्रि जागरण की जाती हैं। जागरण के दौरान महिलाएँ भक्तिगीत कीर्तन कर के जागरण करती है। पर ये सब संयुक्त परिवार की खूबसूरती है।अब एकल परिवार होने के कारण आज की महिलाएँ यू ट्यूब देख कर जागरण करती है,कारण किसी के अंदर संगीत है नही कोई भाव। कथानुसार जो भी महिलाएँ इस व्रत को रखती हैं,उन्हें रात्रि जागरण करना पड़ता है।अन्यथा जो नही करती हैं,उन्हें अगले जन्म में अजगर में लेना पड़ता है।
ऐसी मान्यता है तीज व्रत कथा में।
हरीतालिका तीज व्रत एक बार आरंभ करते हैं,तो यह आजीवन व्रत बन जाता है। जीवन भर का संकल्प।माना जाता है इस दिन स्त्रियाँ सोलह श्रृंगार कर भगवान शिव और माता पार्वती की आराधना करती हैं अपने अखंड सौभाग्य की प्रार्थना करती हैं। कुछ लोगों का मानना है,हम इस व्रत को नही कर सकते, क्यूँकी हमारी जाति और और हमारे परिवार में ये व्रत नही किया जाता है,यानी प्रचलन नही है, देशी भाषा में कहे तो चलता नही है। परंतु भगवान शिव की पूजा करने में भला क्या चलना और क्या नही चलना।जब हम भारतीय परिधान को छोड़कर पश्चमी परिधान को अपना सकते हैं,तो ये तो हमारी संस्कृति है। इसे क्यूँ नही ? ये व्रत कई राज्यों में मनाया जाता है यह त्योहार उत्तर भारत में विशेष रूप से मनाया जाता हैं। भावनाओं से भरा वैवाहिक जीवन औपचारिकताओं से परा होता है।अपनापन और स्नेह ही इसका आधार बनता है। ठीक इस हरितालिका तीज के त्योहार का आधार बनता ही दांपत्य जीवन का समर्पण और प्रेम भाव ही है। शिव और पार्वती के जीवन जैसे सफल और प्रेममयी दांपत्य के लिए प्रार्थना करते है।यदि प्रेम न हो तो व्यक्ति कितना एकाकी है।पूर्ण निविड़ भाव के बिना कोई प्रेमयुती नही,चाहे लोक हो या लोकोक्तर जीवन।

दुनिया रंग-बिरंगी

दुनिया रंग-बिरंगी, भइया !
दुनिया रंग-बिरंगी !
इधर पड़े रोटी के लाले,
उधर जाम छलकाने वालेय
इतना चले न्याय की खातिर
पड़े हुए पैरों में छाले,
लालच ने हाकिम को मारा
चलता चाल दुरंगी !
जिसकी लाठी, भैंस उसी कीय
जय हो जगदम्बा कुर्सी की !
फिर बन्दर के हाथ तराजू,
घड़ी आ गयी हंसी-खुशी कीय
अन्धी बिल्ली ने भी देखे
हैं सपने सतरंगी !
चोर-चोर मौसेरे भाई,
लोकतंत्र ने मुँह की खाईय
मगरमच्छ की आँखें नम हैं,
घोंघे को आयी जमुहाई,
भारत के बगुलों के आगे
पानी भरे फिरंगी !

राजेन्द्र वर्मा, लखनऊ

यह जिंदगी है क्यूँ, ऐसी यारों
इशारों पर अपने नचाती यारों
बड़ी बेबसी है क्या अब कहें
ख्वाब कुछ और दिखाती यारों
खुदा ने हमको साँसे है बख्शी
हरदम हमने की बंदगी यारों
पथरीले है रास्ते बचना जरा
पग-पग पर ये सिखाती यारों
मुफ्लिसी के बादल हैं छाए
कुछ दिन रहेगी ये बेखुदी यारों
चमकेगी गर किस्मत हमारी
जाएगी कभी नहीं सादगी यारों
चारों तरफमुसल्लत है तीरगी
दूर बैठी है हमसे रौशनी यारों
थक जाएगें जब कह देगें यारों
बहुत हो गई अब दिल्लगी यारों

सपना चन्द्रा, बिहार

भरोसा है एक धोखा

मत बैठ किसी के भरोसे कि समय
से ज्यादा लोग धोखे दे जाते हैं।।
चल उठ आगे बढ़ आदत डाल ले
अकेले चलने की कि साथ चलने वाले
भी बीच सफर में साथ छोड़ जाते हैं।।
मत बैठ किसी के भरोसे किस समय
से ज्यादा लोग धोखे दे जाते हैं।।
करोगे कब तक किस पर विश्वास
सीधे मुंह पर तमाचा लगता है
जब भरोसे वाले पल भर में पलट जाते हैं।।।
मत बैठ किसी के भरोसे कि समय
से ज्यादा लोग धोखे दे जाते हैं।।
अपनों की लगी हो भले ही कितनी
भीड़ पर जरूरत पर काम कोई नहीं आते हैं
यही आज की सच्चाई है मतलब की अच्छाई है।।

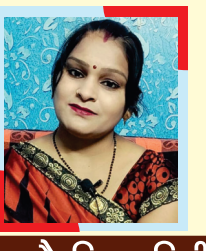

रीतू चौरसिया, दिल्ली

अविद्या

एक बार अकबर ने बीरबल से पूछा की बीरबल यह अविद्या क्या है? बीरबल ने बोला कि आप मुझे 4 दिन की छुट्टी दे दो फिर मै आपको बताऊंगा ! अकबर राजी हो गया और उसने चार दिनों की छुट्टी दे दी !
बीरबल मोची के पास गया और बोला कि भाई जूती बना दो, मोची ने नाप पूछी तो बीरबल ने बोला भैया ये नाप वाप कुछ नहीं डेढ़ फुट लंबी और एक बित्ता चौड़ी बना दो, और इसमें हीरे जवाहरात जड देना सोने और चांदी के तारों से सिलाई कर देना और हाँ पैसे वैसे चिंता मत करना जितना मांगोगे उतना मिलेगा तो मोची ने भी कहा ठीक है भैया तीसरे दिन ले लेना !
तीसरे दिन जूती मिली, अब बीरबल ने एक जूती अपने पास रख ली और दूसरी मस्जिद में फेंक दी जब सुबह मुल्ले नमाज पढ़ने (बाँग देने) के लिए मस्जिद गए तो मौलवी को वो जूती वहां पर मिली मौलवी ने सोचा यह जूती किसी इंसान की तो हो नहीं सकती जरूर अल्लाह नमाज पढ़ने आया होगा और उसकी छूट गई होगी तो उसने वह जूती अपने सर पर रखी, मत्थे में लगाई और खूब जूती को चाटा क्यों क्योंकि वह जूती अल्लाह की थी ना.वहां मौजूद सभी लोगों को दिखाया सब लोग बोलने लगे कि हां भाई यह जूती तो अल्लाह

की रह गई उन्होंने भी उसको सर पर रखा और खूब चाटा यह बात अकबर तक गई अकबर ने बोला, मुझे भी दिखाओ अकबर ने देखा और बोला यह तो अल्लाह की ही जूती है उसने भी उसे खूब चाटा सर पर रखा और बोला इसे मस्जिद में ही अच्छी तरह अच्छे स्थान पर रख दो ! बीरबल की छुट्टी समाप्त हुई, वह आया बादशाह को सलाम ठोका और उतरा हुआ मुंह लेकर खड़ा हो गया अब अकबर ने बीरबल से पूछा कि क्या हो गया मुंह क्यों 10 कोने का बना रखा है तो बीरबल ने कहा अरे राजा साहब हमारे यहां चोरी हो गई अकबर ने बोला कि क्या चोरी हो गया बीरबल ने उत्तर दिया कि अरे हमारे पर दादा की जूती थी चोर एक जूती उठा ले गया एक बची है, तो अकबर ने पूछा कि क्या एक जूती तुम्हारे पास ही है बीरबल ने कहा जी मेरे पास ही है उसने वह जूती अकबर को दिखाई अकबर का माथा ठनका और उसने मस्जिद से दूसरी जूती मंगाई और बोला - या अल्लाह मैंने तो सोचा कि यह जूती अल्लाह की है मैंने तो इसे चाट चाट के चिकनी बना डाली, बीरबल ने कहा राजा साहब यही है अविद्या। यह कहानी सभी मतों, संप्रदाय पर बिल्कुल सही बैठती है । पता कुछ भी नहीं और भेड़ चाल में चले जा रहे है। यथार्थ विद्या को जानें, सत्य को जानें और अपने परिवार को अविद्या से बचाएं।

हे छली! तुम कौन?

तुम मुझे छल रही हो,
स्वर्ण मृग के रूप में।
क्या तुम छली मारीच हों?
दुतिमान हो स्वर्ण आभा से,
सीता - हरण का जतन हो?

गात और लावण्य से,
चमचमाती तुम कौन हो?
विस्मित हो रहे नयन मेरे,
भ्रमित है मन मीन मेरा।
क्या तुम मोहनी माया हो?

तुम्हारे मखमली अंक में,
मैं पड़ा हूँ निश्चेष्ट और अबोध।
नहीं करता पय पान का विरोध,
बस मुझे इतना बता दो ।
क्या तुम्हीं विषधर पूतना हो?

न-तपन की शांति का जतन,
हृदय की दाह को मिटाने का मन।
तुम्हारा चमचमाता चांदनी सा बदन,
प्रीत घट के रीत जाने की लगन ।
हाय! तुम तो मृगमारीचिका हो।

जो तुमने मुझे छला न होता,
बता फिर मुझ से भला कौन होता?
तुम्हारे इस जगमगाते जगत में,
बस जीने का जतन कर रहा हूं,
अपनी ही आत्मा को फिर फिर छल रहा हूं ।

डा. श्रीकांत मिश्र, शाहजहांपुर

संगीत का प्रागैतिहासिक रूप

डा. कविता भटनागर

इस काल में मनुष्य बिल्कुल जंगली अवस्था में रहते थे। अत: संगीत का कोई विकसित रूप नहीं मिलता है, किन्तु यह लोग संगीत कला से पूर्ण परिचित थे। इन लोगों ने पत्थर के दो चौकोर टुकड़ों से मंजीरे की शक्ल के वाद्य का निर्माण किया, जिसका नाम अग्सा था, जिसको बजाते हुए गाया करते थे, और हू हू हेवा जैसी विचित्र ध्वानियां निकालते थे।

उत्तर पाषाण काल मे संगीत कला कुछ विकसित अवस्था में पहुंची। ऐसा प्रतीत होता है कि इस काल की सभ्यता का जन्म संगीत की पृष्ठभूमि पर ही हुआ था, इसी समय सामूहिक संगीत का जन्म हुआ तथा इस युग मे काम करते समय स्त्री और पुरूष स्वर, आलाप द्वारा संगीत का आनंद लेते थे, जिस से उन्हें अपने काम मे एक नवीन चेतना एवं स्फूर्ति मिलती थी। इस समय में किसी भी संगीतिक वाद्य का प्रयोग नहीं होता था। चट्टानों व गुफाओं में बने चित्रों से यह पता चलता है, कि इन्हें चित्रकला का भी ज्ञान था। ताम्रयुग का संगीत पूर्व कालों से श्रेष्ठ था, और ऐसा माना जाता है कि वर्तमान संगीत की नींव ताम्रयुग के संगीत पर ही रखी गयी होगी। भाषा का जन्म भी इसी युग के लोगों के द्वारा हुआ, एवं आर्यों के संगीत पर भी इसी युग के लोगों का

प्रभाव था।

सिन्धु सभ्यता में उपलब्ध संस्कृतियों व मूर्तियों से यह स्पष्ट होता है कि उनमें धर्म, साधना ,मूर्ति पूजा, व वृक्ष जैसी जड़ वस्तुओं की आराधना सम्मिलित थी। लौकिक एवं धार्मिक सभाओं में गीत वाद्य और नृत्य का पर्याप्त प्रचलन था। संगीत के लिए ढोल व दुन्दभी जैसे वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता था। हडप्पा से प्राप्त एक चित्र मे एक पुरूष को वाद्य के सामने ढोल बजाते हुए अंकित किया गया है । अत: दो मुद्राओं पर दीर्घ आकार ढोल अंकित है ,जिसके दोनो मुख चमड़े से मढ़े हुए हैं । नृत्य में लय दर्शाने के लिए झांझ व खडताल के समान वाद्यों के चित्र भी मिलते है।

यद्यपि वीणा जैसे तन्तु वाद्यों का कोई संकेत इस सभ्यता मे नहीं मिलता है, किन्तु रोपड नामक स्थान की खुदाई करने पर एक ऐसी स्त्री की मूर्ति प्राप्त हुई है। जो चार तारों की वीणा बजा रही है। सुमेरी सभ्यता मे भी वीणा जैसे वाद्य यंत्रों का प्रचलन प्राचीन सिन्धु सभ्यता से ही रहा होगा ।अत: अन्य संस्कृतियों के सम्बन्ध में आने से संगीत भी परिवर्तित होता रहा। समय परिवर्तनानुसार मानव सभ्यता एवं संस्कृति का विकास हुआ। वर्तमान संगीत हमारे प्राचीन संगीत का ही विकसित रूप है ।

नवाब निजाम अली खान शहबाजनगरी

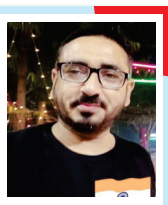

डा. विकास खुराना
समीक्षक

नवाब निजाम अली शाहबाजनगरी 1857 के दिनों के नेतृत्वकर्ता थे। इनकी शहादत बिचपुरिया के युद्ध में जनरल वालपोल के साथ हुई संघर्ष में हुई।जिसके बाद ही अंग्रेज जलालाबाद में प्रवेश कर सके। जनपद से जुड़े ऐतिहासिक स्रोतो में उनके संदर्भ में अस्पष्ट तथा बेहद कम विवरण है।उक्त पुस्तक उनके संदर्भ में जनपद के ऐतिहासिक लेखन को समृद्ध करेगी,ऐसी आशा है। पुस्तक का विमोचन गांधी पुस्तकालय में किया गया। यह पुस्तक कर्नल विपिन बिहारी श्रीवास्तव द्वारा लिखी गई जो शहबाजनगर के मूल निवासी है।

भारत राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष में जनपद शाहजहांपुर का योगदान अभूतपूर्व रहा हुआ है। ऐसे दो अवसर आए जब जनपद शाहजहांपुर ने राष्ट्रीय स्तर पर इस लड़ाई का नेतृत्व किया। जिसमें से एक अवसर सन 1857 में प्रथम राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष के दौरान उठा। सितंबर 1857 में जब दिल्ली में अंग्रेजों ने दोबारा अपनी हुकूमत कायम कर ली थी तब मुगल बादशाह के बेटे भतीजे ने शाहजहांपुर आकर जनरल बखत खान, मौलवी अहमद उल्लाह शाह, नाना साहब, हजरत महल इत्यादि प्रसिद्ध क्रांतिकारी ने एक साथ शाहजहांपुर में रहकर आजादी की लड़ाई का नेतृत्व किया। ऐसा दूसरा अवसर तब आया जब शाहजहांपुर में पंडित राम प्रसाद बिस्मिल ने प्रसिद्ध क्रांतिकारी नेता शचिंद्र सान्याल के साथ मिलकर हिंदुस्तान प्रजातांत्रिक संगठन बनाया। जिसके अंतर्गत काकोरी ट्रेन क्रिया को अंजाम दिया गया। जनपद शहीदों की शहादत के बाद भगत सिंह ने इस संगठन का नेतृत्व संभाला और इसका नाम बदलकर हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन कर दिया। यहां तक की सुभाष चंद्र बोस की आजाद हिंद सेन में भी जनपद के शहीदों ने सैनिकों ने सम्मिलित होकर भारत की सीमाओं पर आजादी की लड़ाई लड़ी। नेताजी सुभाष चंद्र बोस

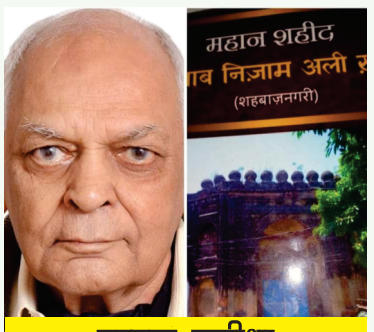

पुस्तक समीक्षा

शाहजहांपुर में दो बार आए और शाहजहांपुर के लोगों ने उनको 1000 चंदा भी दिया। इतना सब कुछ होने पर भी जनपद स्तर पर एतिहासिक लेखन कार्य बहुत ही कम हुये। यहां तक की सन 1857 के विस्तृत विवरण के बारे में उस समय के शहीदों के बारे में यथा जवाह राय जो पहले बटालियन की के सैनिक थे। निजाम अली, कजी सर्फराज अली, अब्दुल कादिर इत्यादि प्रख्यात क्रांतिकारियों के बारे में हम लोगों की जानकारी बहुत ही कम ही है। इसी प्रकार रानी झांसी लक्ष्मी बाई के कमांडर रहे गुलाम गौस खान, शिवचरण दुबे इत्यादि सैनिकों, अहमद यार खान के संदर्भ में हम लोगों के पास ऐतिहासिक साक्ष्य केवल उतने हैं जितने की ब्रिटिश रिपोर्ट्स में प्राप्त होते हैं। जनपद शाहजहांपुर के स्तर पर ऐतिहासिक लेखन अत्यंत आवश्यक है ताकि शाहजहांपुर के ऐतिहासिक गौरव की रक्षा की जा सके। प्रस्तुत पुस्तक शाहिद निजाम अली खान शाहबाज नगरी इस दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। कर्नल विपिन बिहारी श्रीवास्तव द्वारा लिखी गई है यह पुस्तक न केवल निजाम अली खान के बारे में विस्तार जानकारी उपलब्ध कराती है बल्कि तत्कालीन घटनाक्रम तथा संवाद परिसंवाद के संदर्भ में रोचक विवरण देती है। किताब 31 मई 1857 में सेंट मैरी चर्च में घटी घटनाओं के संदर्भ में भी व्यापक जानकारी उपलब्ध कराती है इस दृष्टि से युक्त किताब अत्यंत ही लाभप्रद है। शाहबाद नगर के किले जिसे रूहैला कल में शाहबाज खान द्वारा बनवाया गया था के संदर्भ में कहीं भी लेखन का कार्य नहीं हुआ था। प्रस्तुत पुस्तक में विपिन बिहारी श्रीवास्तव ने मुक्त किले के संदर्भ में भी उसकी वस्तुओं के संदर्भ में भी व्यापक जानकारी उपलब्ध कराई है। निजाम अली खान गदर के अमर शहीद हैं। इनकी शहादत 28 अप्रैल 1857 को बिचपुरिया में अंग्रेजों के खिलाफ लड़ते हुए हुई थी। ईनकी शहादत के बाद ही ब्रिटिश फेर्सज जलालाबाद तथा अल्लाहगंज को अपने नियंत्रण में लेने में कामयाब हो पाई थी। उनकी मजार शाहबाज नगरी में खुले में बनी हुई है, जो इस समय उपेक्षा का शिकार है जिसपर ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। यह पुस्तक जनपद के ऐतिहासिक लेखन के संदर्भ में एक मील का पत्थर सिद्ध होगी ऐसा विश्वास है।

नौकरी

विभा कुमारी, जमशेदपुर

सौरभ के पास में एमबीए की डिग्री है वह मार्केटिंग से मैनेजमेंट की पढ़ाई पूरी किया है परंतु कॉलेज में कैंपस नहीं होने के कारण अभी तक उसे जांब नहीं मिल पाई है घर पर ही आकर रह रहा है घर पर उसके दो छोटी बहनें मां बाबूजी और दादी साथ में घर में रहते हैं दादी अपने पोते सौरभ से बहुत प्यार करती है बहुत स्नेह रखती है पर सौरभ का मन हर समय खीजा खीजा रहता है बाबूजी उसे परेशान करके रखे हैं 6:00 बजते ही उठने के लिए जगाने लगते हैं मन मसौढ़ कर उठता है बाथरूम जाता है फ्रेश होकर बाहर आता है आते ही उसके बाबूजी गुस्साने लगते हैं यह क्या तरीका है तुम्हारा तुम बिस्तर से उठे और बिस्तर को भी साफनहीं किया रूम का पंखा चलता ही छोड़ कर तुम निकल गए तुम्हारे अंदर कोई तहजीब नहीं है जीवन में आगे बढ़ाने के लिए तौर तरीके अपनाने पड़ते हैं। अभी बिस्तर ठीक करो और अपना काम स्वयं करने की आदत डालो स्नान करके आने के बाद अम्मा रोटी भुजिया और दही देती है खाने के लिए नाश्ता करके वह घर से बाहर निकाल कर घूमने चल जाता है फिर जैसे ही वह बाहर से आता है चप्पल पहने ही घर में घुस जाता है उसे देख फिर उसके बाबूजी गुस्साने लगते हैं। बाहर में रहकर तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है कोई संस्कार तुम में नहीं रह गया है पता नहीं भगवान तुम्हारा क्या करेंगे सुनकर सौरभ के तो ऊपर 1 घड़ा पानी पड़ गया वह मन ही मन इतना कुंठित हो गया था की कब नौकरी मिले और वह घर छोड़कर यहां से हमेशा के लिए भाग जाए अपने आप में उसे उबन और घुटन सी महसूस होने लगी थी वह अपने आप को कोसने लगा कब इस घर से और इस घर के लोगों से मुझे छुटकारा मिलेगी सच जैसे ही नौकरी मुझे मिलेगी मैं अब इस घर में कभी नहीं आऊंगा क्या मां-बाप सिर्फ डांटने के लिए होते हैं मैं तो इनकी डांट फटकार खा खा कर तंग आ गया हूं पेपर में प्रतिदिन वह नौकरी का विज्ञापन देखता था आज उसे एक जगह पर मार्केटिंग मैनेजमेंट के लिए विज्ञापन दिखा उसमें वांक इन इंटरव्यू लिखा था वह जाकर मां को बोला जल्दी-जल्दी नाश्ता बना दो मुझे इंटरव्यू देने जाना है मां ने जल्दी-जल्दी नाश्ता बनाई बेटे को नास्ता खिलाई और पूजा करवा कर बेटे को घर से विदा की सौरभ इंटरव्यू देने पहुंचा वहां पर बहुत से लोग कतार में लगे थे नीचे फ्लोर में सभी प्रतिभागी बैठे थे एक-एक करके उनको दूसरे फ्लोर पर बुलाकर इंटरव्यू लिया जाता था जैसे ही उसका नंबर आया वह नीचे फ्लोर से ऊपर जाने के लिए सीढ़ियां चढ़ने के लिए तैयार हुआ तभी उसका ध्यान पंखा पर गया जो चल रहा था उसने झट से पंखे को बंद कर दिया जिस जगह पर सारी कुर्सियां रखी थी उसे जगह पर अपनी बैठी हुई कुर्सी को भी उठा कर रख दिया और धीरे-धीरे सीढ़ियां चढ़कर सेकंड फ्लोर पर पहुंच गया इंटरव्यू लेने के लिए पांच लोग बैठे थे उन पांचो ने सौरभ से एक भी सवाल नहीं पूछा बस सौरभ परेशान हो गया कि यह कैसा इंटरव्यू है जहां कोई सवाल मुझसे नहीं पूछा गया है वह मायूस हो गया और सोचने लगा की क्या मेरा इंटरव्यू अब नहीं होगा जैसे ही वहां के हेड ने कहा आप कल से यहां आकर ज्वाइन कर लीजिए सौरभ हक्का-बक्का रह गया वह सोच कर परेशान होते हुए उसने आखिर पूछ ही डाला सर आपने तो मेरा इंटरव्यू लिया ही नहीं फिर आपने मुझे कैसे सेलेक्ट कर लिया इंटरव्यू के लोगों ने सौरव को समझाया की बेटा जिंदगी में अनुशासन का बहुत महत्व है जिसके जीवन में अनुशासन नहीं वह कभी भी सफल इंसान नहीं हो सकता है आप जहां बैठे थे वहां से आप निकलते वक्त सबसे पहले अपने पंखा बंद किया था फिर जिस कुर्सी पर आप बैठे थे उसे कुर्सी को उठाकर सही जगह पर रख दिया था इससे पता चलता है कि आप एक अनुशासित और संस्कारी व्यक्ति है और हमें अपने ऑफिस में एक अनुशासित और संस्कारी ही व्यक्ति चाहिए जो सिस्टम से और अपने दायित्व का निर्वाह करते हुए अपना काम कर सके धन्य है आपके माता-पिता जिन्होंने आपको इतना सुंदर संस्कार दिया है सौरभ की आंखें छलक गई वह बड़े ही गंभीर लहजे में कहा मैं एक गरीब परिवार से आता हूं मेरे घर के लोग एक-एक तिनके का महत्व जानते हैं और हमें भी एहसास दिलाने की कोशिश करते रहे हैं इसी का यह नतीजा है कि मैं अपना काम सही तरीके से कर पाता हूं सौरभ जल्दी-जल्दी घर आया घर आते ही दादी के गले लगा कर रोने लगा और कहने लगा मुझे मेरी डिग्री ने नौकरी नहीं दिलाई है नौकरी तो आप लोगों द्वारा दी गई संस्कार और परवरिश के कारण मिली है जिसे मैं बंधन और घुटन महसूस कर रहा था

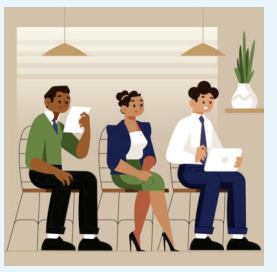

ग्रामीण बालिकाएं और उनकी विचारणीय स्थिति

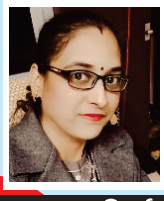

पूजा गुप्ता, मिर्जापुर

परिवार के भरण-पोषण वाली कई गतिविधियों में ग्रामीण लड़कियों की हिस्सेदारी होती है हालांकि इसे मजदूरी नहीं माना जाता है। शहरी या उपभोग वस्तुओं के उत्पादन की तरह इनका मूल्य नहीं चुकाया जाता है। उन्हें अक्सर भुला दिया जाता है। अत: बाल मजदूरी की परिभाषा के दायरे में रहकर अनेक अध्ययन लड़कियों के पारिवारिक कामों को बाल मजदूरी से अलग रखते हैं। फिर भी कई अर्थों में ऐसा विभाजन इन कामों के सामाजिक एवं आर्थिक पहलुओं को नजरअंदाज करता है। इसका एक कारण यह है कि आर्थिक सिद्धांतों में ऐसे कामों की कोई गिनती नहीं की जाती है हालांकि गरीब परिवारों की अर्थव्यवस्था की यह गतिविधियां प्रभावित करती है। लड़कियों के मामले में यह चुप्पी और भी रहस्यमयी होती है क्योंकि उनके द्वारा किये जाने वाले कार्यों को स्त्री-सुलभ कार्यों की श्रेणी में शामिल किया जाता है। ग्रामीण समुदायों में लड़कियों के कार्यों के अध्ययन अक्सर उनके काम की संरचना अथवा उनसे जुड़े मतलबों को नजरअंदाज करते हैं। पांच साल की बच्ची भी कैसे खेत पर अपने छोटे-भाई बहिन को संभालते हुए पक्षी भगाने का काम करती है या पानी लाती है। यह दृश्य गाँवों में आम है। आठ साल की आयु में लड़की का योगदान औरत के बराबर पहुँच जाता है। लिंग भेद पर आधारित घर की दिनचर्या से लड़कियाँ बचपन में ही रूबरू हो जाती हैं। वे इसे अपनी नियति मान लेती हैं। और इसी परिणामस्वरूप उन्हें समाज के आर्थिक कार्यों से काटकर रखा जाता है और उनके पारिवारिक कार्यों को बच्चे पालना या घर की देखभाल को निचले दर्जे का स्थान दिया जाता है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में लड़कियों का काम इतना कम दृश्य है कि अक्सर उसका अस्तित्व ही भुला दिया जाता है। दायरे में लड़कियों में कार्यों को देखा जाये तो यह आभास हो जायेगा कि बालिका का कार्य मजदूरी के कितना नजदीक है। भारतीय परिस्थिति में कुछ लड़कियाँ पारिवारिक इकाइयों में काम करती हैं जबकि अन्य दिहाड़ी पर काम करती हैं। उन्हें उनके काम की प्रकृति के आधार पर अलग-अलग वर्गीकृत किया गया है। घरेलू कार्य, अनुबंधित कार्य, वैतनिक श्रम, गैर घरेलू तथा गैर मौद्रिक कार्य। माता-पिता की निम्न तथा अनियमित आय, परिवार की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति बच्चों को काम करने के लिए तथा पारिवारिक आय में पूरक बनने के लिए बालिकाएं मजदूरी करती है। भारत में सामजिक आर्थिक स्थितियां तथा माता-पिता एवं नियोजकों का रवैया भारत में बालिका मजदूरों की दयनीय दशा की जिम्मेदार हैं। वे दबावपूर्ण स्थितियों में काम करती है जो कई बार जानलेवा भी होता है। आयु वर्ग के हिसाब से लड़कों की अपेक्षा लड़कियाँ श्रम बाजार में कम उम्र में प्रवेश करती हैं। जहाँ 2 वर्ष से कम आयु की 2 प्रतिशत लड़कियाँ मजदूर हैं वहीँ लड़कों में यह प्रतिशत 14 है। 5-14 साल के बीच की भारतीय लड़कियाँ श्रमशक्ति में बड़े पैमाने पर विद्यमान है। उनमें से कुछ मजबूर है या अनुबंधित है तथा यहाँ तक कि कुछ को चकलाघरों में बेच दिया जाता है। भिन्न-भिन्न आर्थिक तथा सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों के अंतर्गत लड़की को वस्तु के रूप में देखा जाता है उसे

सस्ते श्रम का स्रोत तथा समाज पर बोझ समझा जाता है। श्रमिक बालिकाओं के आंकड़े समस्त अनुबंधित मजदूर निर्माण मजदूर, घरेलू नौकरानी, बागान मजदूर और अन्य अपरिचित क्षेत्रों के श्रमिकों का व्यापक प्रतिविम्ब है। सन 1991 के जनसांख्यिकी आंकड़ों के अनुसार शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में बालिका मजदूरों की संख्या अधिक है। कुल श्रमिक बालिकाओं का 9: ग्रामीण क्षेत्रों में रहता है जबकि सिर्फ 1: शहरी क्षेत्रों में विद्यमान है। शहरी क्षेत्रों में कार्यरत बालिकाएँ समान्यत: स्लम बस्तियों तथा झोपड़ी पट्टी इलाकों में रहती हैं और ऐसे परिवारों से सम्बन्ध रखती है जिनकी आर्थिक स्थिति बहुत खराब होती है । असंगठित क्षेत्रों में वे बड़ी संख्या में काम करती हैं । नेशनल कमीशन ऑन लेबर के अनुसार बच्चों का रोजगार विशेषकर लड़कियों का रोजगार संगठित क्षेत्रों ,जैसे सूत कातना, बुनना, पत्थर तोड़ना, गारमेंट सिलाई, हेन्डीक्राप्ट पेंट बनाना और सड़क निर्माण के कार्यों में भिन्न-भिन्न में दिखाई देता है। देह व्यापार में बालिकाओं का शोषण सर्वज्ञात है। भारत में बाल वेश्यावृत्ति तेजी बढ़ रही है और यहाँ कम उम्र की लड़कियों की मांग बढ़ रही है। धार्मिक स्थलों पर बलिका भिखारिनें बड़ी संख्या पायी जाती है। भिखारियों के परिवार में बच्चे आय का सबसे बड़ा स्रोत होते हैं भारत के सात बड़े शहरों में फुटपाथ पर रहने वाले बच्चों की संख्या काफी है। एवं उनमें से बहुत सी निराश्रित तथा अनाथ लड़कियाँ है जो बालिका मजदूरों का अन्य समूह बनाती है जिसके बारे में बहुत कम जाना जाता है। उन्हें या तो गैंग के सदस्यों द्वारा काम पर लगाया जाता है या फिर कुछ समाज-विरोधी समूह सामान छीनने, जेब काटने आदि कार्यों में उनका उपयोग करते हैं। इस रूप में उनका श्रम गैंग के नेता अथवा मालिकों द्वारा इस्तेमाल किया जाता है। अनौपचारिक क्षेत्रों में लड़कियाँ बड़ी संख्या में कार्यरत है। बड़ी संख्या में लड़कियाँ घरेलू कामगार के रूप में कार्यरत हैं जिसे जनसांख्यिकी आंकड़ों में नहीं दिखाया जाता। हालाँकि बालिका मजदूर हर जगह मौजूद है तब भी ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में इसकी व्यापकता को सूचित करने वाले सही आंकड़े विद्यमान नहीं है। अत: बालिका मजदूर सम्बन्धी अधिक आंकड़ों की आवश्यकता है। श्रमिक बालिका मूलत: सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों की प्रबलता का परिणाम है जिससे वे उनके अधिकारों तथा आवश्यकताओं से वंचित हो जाती हैं। लड़कों की अपेक्षा लड़कियों को लघु कार्यों में संलग्न दिखाया जाता है। लड़कियों के लिए काम का चयन करते समय परिवार के सदस्य, रिश्तेदार, दोस्त तथा परिचितों द्वारा विशेष ध्यान रखा जाता है। मालिकों द्वारा लड़कियों का अत्यधिक शोषण किया जाता है जो उन्हें घर अथवा कार्यस्थल से बाहर काम करने पर बहुत कम पैसे देते हैं। 1981 के जनसांख्यिकी आंकड़े दर्शाते हैं की लगभग 15 साल की उम्र की 1 में से एक लड़की शहरी क्षेत्रों में मजदूरों का कार्य करती है। जबकि ग्रामीण क्षेत्र में सौ में से चार लड़कियाँ मजदूरी का काम करती है। ईन सब नियम कानून पारित होने के बाद भी ग्रामीण बालिकाएं शोषण का शिकार हो रही है जिनके उत्थान के लिए स्पष्ट कोई कानून नहीं है। आज भी कार्य के नाम पर लड़कियों को बेच दिया जाता है और बंधुआ बना दिया जाता है। बेहद सोंचनीय स्थिति है।

बौद्धकाल में समृद्ध थी भारत की अर्थव्यवस्था

डा. मधुकर श्याम शुक्ला

नई तकनीक पर आधारित उत्पादन के साधनो में परिवर्तन ही इतिहास बदलते है,यह सत्य हैं। नई तकनीक जिसमे लोहे का प्रयोग बढ़ा हुआ था द्वारा हल कुल्हाड़ी और तलवारे बनी। जंगल काट कर खेती के अधीन व्यापक जमीन लाई गई जिससे न केवल राज्य बने बलकि अर्थजागत को तेजी मिली। 700 ई.पू. के आस-पास उत्तर प्रदेश एवं बिहार की जनता की स्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। पाणिनी की अष्टध्यायी और सुतनिपात के अनुसार, खेत की दो या तीन बार जुताई होती थी। धान की रोपाई और लोहे के उपकरणों के ज्ञान ने कृषि उत्पादन में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया। चावल उत्पादक मध्य गंगा घाटी में, गेहूँ उत्पादक ऊपरी गंगा घाटी की तुलना में अधिक उत्पादन होता था। उत्पादन अधिशेष से जनसंख्या वृद्धि संभव हुई। इसके अतिरिक्त उत्पादन में यज्ञ पर खर्च करने की प्रवृत्ति कम हो गई। सांख्यान गृह सूत्र में बैल द्वारा खेती करने, हल चलाने एवं मंत्रों के साथ समस्त कृषि प्रक्रिया को आगे बढ़ाने का उल्लेख है। पाणिनी के समय खेतों का सर्वेक्षण करने वाले अधिकारी को क्षेत्रकार कहा जाता था। बौधायन के अनुसार, छरू निवर्तन भूमि की उपज से एक परिवार का भरण-पोषण होता था। अतरू इससे ज्ञात होता है कि भूमि-माप की इकाई निवर्तन कहलाती थी और एक निवर्तन डेढ़ एकड़ के बराबर होती थी।

सूत्र ग्रंथों में दो प्रकार के जौ- यव और यवानी, पाँच प्रकार के चावलों (कृष्ण ब्रिही, महाब्रीही, हायन, यवक और पष्टिक) का उल्लेख है। बौद्ध ग्रन्थों में ईख की खेती की चर्चा की गई है। प्राचीन बौद्ध एवं जैन साहित्य में शलिल (चावल) के 4 किस्मों की चर्चा की गई है (रक्त शलि, कालम शलि, गंधशलि, महाशलि)। प्राचीन बौद्ध साहित्य में खेत पति, खेत स्वामी या वथूपति की चर्चा की गई है। इसका अर्थ है- भूमि के अलग-अलग स्वामी होते थे। इससे यह संकेत मिलता है, भू व्यक्तिगत स्वामित्व की भावना विकसित हो। चुकी थी। कृषि में भी बड़े-बड़े फार्मों का विकास हुआ। माना जाता है कि 500 हलों से खेती की जाती थी। अब बौद्ध ग्रंथों के अनुसार कृषि में दासों, कर्मकारों एवं पस्सों को लगाया जाता था।

वैदिक युग में याजक (यज्ञ करने वाला) और पशुचारक थे किन्तु छठी सदी ई.पू. में वे पहली बार विशाल पितृसत्तात्मक परिवार का मुखिया बन गए। उन्हें धन के कारण सम्मान प्राप्त हुआ। गृहपति मेंडक राज्य की सेना को वेतन देता था और बुद्ध संघ की सेवा के लिए उसने 1250 गौ सेवकों को नियुक्त किया था। उसी तरह अनाथपिंडक संपन्न गृहपति था।

इस काल में राजगृह में 18 प्रकार के शिल्पों की चर्चा की गयी है। शिल्पों का केवल विशिष्टीकरण हुआ शिल्पों का क्षेत्रीयकरण भी हुआ। वैशाली के सदलपट में कुंभकार की 500 दुकाने थीं। जिलाहों की भी अलग-अलग बस्तियां थीं जुलाहों का वार्ड तंतु बायधान कहलाता था। हठी दांत का काम करने वाले दंतकारवीथि कहलाते थे। रंगरेजों का कार्य करने वाले रंगरेजकार विथि कहलाते थे। यह काल उत्तरी काले पॉलिशदार मृदभांड चरण से जुड़ा हुआ था। इसी काल में 300 ई.पू. के आस-पास घेरेदार कुएं एवं पक्के ईंटों का प्रयोग होने लगा। धातु के आहत सिक्के का प्रथम प्रयोग 500 ई.पू. के आस-पास हुआ। आरंभ में आहत सिक्के चांदी के बनाये जाते थे किन्तु तांबे के भी होते थे। पंचमार्क सिक्के में धातु के टुकड़ों पर हाथी, मछली, सांड, अर्द्धचद्र की आकृतियाँ बनाई जाती थीं। ये पूर्वी उत्तर प्रदेश, मगध और तक्षशिला में विशेष रूप से पाए गए हैं। कुछ अन्य सिक्कों की भी चर्चा हुई है यथा कर्षापण, पाद, माशक, काकणिक, सुर्वण (निष्क)। बिम्बिसार और अजातशत्रु के काल में राजगृह में पाँच मास एक पाद के बराबर होता था। पाणिनी के काल में निम्नलिखित सिक्के चलते थे-निष्क, पण, पाद, मास, शान (तांबा का एक सिक्का)।

श्रेणियों के पदाधिकारियों को चौधरी (प्रमुख) और जेठक (ज्येष्ठक) और भाण्डागारिक कहा जाता था। बिना श्रेणियों के संगठित उद्योगों का संचालन ज्येष्ठक करते थे। व्यापार प्रमुख या मुखिया 'महासेठी' कहलाता था। कारवाँ (व्यापारियों का काफिला) सितारों और कौए की सहायता से थलनिय्याम के नेतृत्व में चलता था। बुद्ध काल में आर्थिक संघों को बहुत स्वायत्तता प्राप्त थी। वे वस्तुओं के मूल्य निश्चित करते थे। निजी सदस्यों पर गहरी पकड़ थी और इसके लिए उन्हें राज्य की ओर से भी मान्यता प्रदान की गई थी। वे भ्रष्ट सदस्यों का निष्कासन कर सकते थे। किसी भी स्त्री को बौद्ध संघ की सदस्यता के लिए, अपने पति के अतिरिक्त पति के संघ की अनुमति भी लेनी पड़ती थी। प्रारंभिक धर्म सूत्रों में ऋणों पर ब्याज 1(प्रतिशत प्रतिमास (15 प्रतिशत वार्षिक) था। वाणिज्य व्यापार विकसित अवस्था में था। एक मार्ग ताम्रलिप्ति से पाटलिपुत्र एवं श्रावस्ती के माध्यम से उज्जैन होते हुए भड़ौंच से जुड़ता था। दूसरा

मार्ग मथुरा-राजस्थान-तक्षशिला से जुड़ा था। व्यापार की वृद्धि के लिए पांडय सिद्धि संस्कार किया जाता था। इसमें सोम की पूजा की जाती थी।

बुद्ध काल को द्वितीय नगरीकरण का काल भी कहा जाता है। प्रथम नगरीकरण सिन्धु घाटी सभ्यता के दौरान हुआ था। तैतरीय अरण्यक में पहली बार नगर की चर्चा की गई है। उस काल में कुल 60 नगर थे जिनमें श्रावस्ती जैसे 20 नगर थे। बुद्ध काल में 6 बड़े नगर या महानगर थे यथा, राजगृह, चंपा, काशी, श्रावस्ती, साकेत, कौशांबी।

अनीता चांदपुरी बनी सार्क जर्नलिस्ट फोरम की सलाहकार

लोक पहल

नई दिल्ली। देश की जानी मानी पत्रकार और समाज सेविका अनीता चांदपुरी को सार्क जर्नलिस्ट फोरम जम्मू-कश्मीर चौप्टर का सलाहकार नियुक्त किया गया है. सार्क जर्नलिस्ट फोरम आठ देशों के पत्रकारों का संगठन है और दुनिया के अन्य देशो में रह रहें पत्रकारों के हितो का पैरोकार भी है। यह संगठन बिना भेद -भाव छोटे बड़े पत्रकारों को अपने साथ जोड़ कर चलने वाला दुनिया का सबसे पहला संगठन है। भारत के भौगोलिक सीमा को देखते हुए राज्य को चौप्टर में विभाजित किया गया और प्रत्येक राज्य में एक सलाहकार नियुक्त किये गए हैं. जम्मू-कश्मीर की अनीता चांदपुरी जो कि सामाज सेविका और दिल्ली से निकलने वाले अखबार टाकिंग न्यूज से जुड़ी हैं। सार्क जर्नलिस्ट

फोरम के अंतराष्ट्रीय अध्यक्ष राजू लामा (काठमाण्डू) ने उनकी नियुक्ति पर हर्ष जताया है और उम्मीद जताई की भविष्य में अनीता संगठन को मजबूत करने में अपनी भूमिका निभाएगी। भारत के सार्क जर्नलिस्ट फोरम के अध्यक्ष अनिरुद्ध सुधांशु ने भी उनकी नियुक्ति को संगठन के लिए अहम बताया और कहा कि ये नियुक्ति न केवल संगठन के लिए लाभकारी है बल्कि अनीता चांदपुरी के जरिये सार्क जरनलिस्ट फोरम और जम्मू दृकश्मीर के पत्रकारो के बीच संवाद कायम करने में भी अहम भूमिका निभाएगी।

अमित त्यागी बने एआईटीएफ के संरक्षक

शाहजहांपुर (लोक पहल)। दिल्ली स्थित ताइक्वांडो की प्रमुख संस्था (आल इंडियन ताइक्वांडो फेडरेशन) ने अमित त्यागी को अपना संरक्षक नियुक्त किया है। संस्थान के चेयरपर्सन रिजवान रजा ने इस आशय का पत्र श्री त्यागी को भेजा है। गौरतलब है दिसम्बर 2023 में फेडरेशन के द्वारा दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में एक भव्य आयोजन होने जा रहा है। इसमें भारत, दक्षिण कोरिया, यूएसए, नेपाल, बांग्लादेश, मिस्र, मलेशिया और कांगो की सहभागिता सुनिश्चित हो चुकी है।

दादी रणी सती की महिमा का किया गुणगान

शाहजहांपुर (लोक पहल)। भावी अमावस्या के अवसर पर चौक स्थित दादी राणी सती मन्दिर में मंगल पाठ का आयोजन दादी राणी सती परिवार की ओर से किया गया। कार्यक्रम में महिलाओं ने दादी राणी सती की महिमा का गुणगान करते हुए धार्मिक भजनों को प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर दिनेश अग्रवाल, हेमा अग्रवाल, विकेश अग्रवाल, मधु अग्रवाल, विनय अग्रवाल, सरोज अग्रवाल, कुणाल अग्रवाल, निशा अग्रवाल, अजय अग्रवाल, ऊषा खण्डेलवाल, सुनील अग्रवाल, प्रतीक कुमार, प्रदीप अग्रवाल, शिवम मिश्रा, विभु मिश्रा आदि मौजूद रहे।

लाइंस क्लब सहेली ने किया शिल्पी गुप्ता को सम्मानित

शाहजहांपुर (लोक पहल)। लाइंस क्लब सहेली ने राधा अष्टमी का पर्व बड़े धूमधाम से मनाया। इसी दौरान लाइंस क्लब सहेली की पूर्व अध्यक्ष शिल्पी गुप्ता को भाजपा महानगर अध्यक्ष बनाए जाने पर क्लब की चार्टर प्रेसिडेंट मीरा सेठ एवं वीना सिंह ने अंग वस्त्र पहनाकर सम्मानित किया। उन्होंने कहा हम सभी

के लिए ये गर्व की बात है भाजपा संगठन ने एक महिला को महानगर अध्यक्ष बनाकर महिला सशक्तिकरण का अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया है। क्लब की सचिव नमिता सिंह ने सभी का आभार किया।

अजीत यादव, शाहजहांपुर

विचारों में निहित है रचनात्मक शक्ति

विचार स्वयं में एक सामर्थ्य है। विचारों की तरंगें प्रकाश, ताप, ध्वनि एवं विद्युत की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली हैं। प्राण-शक्ति का चुम्बकीय विद्युत प्रवाह ही विचारों को ऊर्जा प्रदान करता है। इसकी तीव्रता के आधार पर इसे 'मन्द,मध्यम और गहन' वर्गों में बांट सकते हैं। अनियमित विचारों में बल कम होता है। उनकी सम्प्रेषण क्षमता सीमित होती है, उनमें प्रभावित करने की भी क्षमता अत्यल्प होती है। अविकसित व्यक्तियों की विचार शक्ति मन्द होती है। सामान्य औसत व्यक्तियों की विचार- शक्ति मध्यम होती है। मध्यम विचार-शक्ति वाले लोगों की बुद्धि पल्लवग्राही होती है, मूलग्राही नही। गहनता से विचार करने के लिए व्यक्ति को अपनी सम्पूर्ण ध्यान-शक्ति नियोजित करनी होती है। इसके पीछे छिपे विज्ञान से हमें पता चलता है कि जब प्राण-शक्ति का विशेष स्फुरण होता है, और मस्तिष्क में एक ही विचार देर तक बना रहता है तब वह विचार अधिक ऊर्जा जो ग्रहण कर लेता है जिसके परिणामस्वरूप इस विचार की प्रभाव-क्षमता अधिक बढ़ जाती है। जब मन अन्य सभी दिशाओं से हटकर किसी विशेष विचार पर अधिक समय तक केंद्रित रहता है, मस्तिष्क के सभी ऊर्जा कोष उसको शक्ति प्रदान करते हुए उस विचार को प्रचण्डता प्रदान करते हैं। ऐसे विचारों के स्वामी व्यक्ति के सामने कितने भी नकारात्मक विचारों को,अवरोधों को प्रेषित किया जाये, उसका कुछ भी नही कर सकते हैं।

एकाग्रतापूर्वक तीव्र इच्छा-शक्ति के साथ किये गये विचारों की शक्ति आचरण से जुड़ जाने पर प्रभावपूर्ण हो जाती है। यदि यह शक्ति सद्भाव प्रेरित होती है तो फिर नि:संदेह यह सद्प्रवृतियों को प्रदीप्त करेगी। और यदि दुर्भावनापूर्ण हुई तो फिर विनाशक प्रभाव वाली होगी। भारत सहित दुनिया भर के दार्शनिकों के चिन्तन, मनन व विश्लेषण बताते हैं की मनुष्य के विचारों का अपना एक जगत होता है। इसे विचारों एवं कल्पनाओं का जगत कह सकते हैं। यधपि विचार की प्रक्रिया में बुद्धि की प्रधानता होती है पर व्यापक अर्थों में दोनों ही मानसिक चेतना के अंतर्गत आते हैं।

आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने भी उपयुक्त दार्शनिक चिंतन को अपने प्रयोग की कसौटी पर खरा सिद्ध किया। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक पीफेन बरगर ने अपनी पुस्तक 'प्रिंसिपल्स ऑफएप्लाइड साइकोलॉजी' में विचारमय आकारों का विवेचन किया। उनका अपने इस अध्ययन में मानना है कि इनका अस्तित्व विचारमय आकारों को विचार-जगत में भेज देता है, तो ये अपना प्रयोजन पूर्ण करने के लिए विचार-जगत में विचरण करने लगते हैं। इन विचारों का गठन चिंतन करते समय होना प्रारम्भ हो जाता है। जब यह विचार एक स्पष्ट आकार को प्राप्त हो जाता है तब फिर अपने लक्ष्य की तलाश में जुट जाते हैं और एक नूतन रचना प्रस्तुत करते हैं। श्री अरविंद कहते हैं कि मनुष्य अपने विचारों की प्रभावोत्पादकता जाने बिना ही बेतुका सृजन करता रहता है। आज विज्ञान के इस युग में मनुष्य ने बाहर बहुत कुछ विकास कर लिया है अब आवश्यकता अपने वैचारिक सामर्थ्य की ओर ध्यान देने की है। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने विचार के महत्व को समझते हुए विचार क्रांति अभियान का शुभारंभ किया। दुनिया का काया पलट कर देने की विलक्षणता वैचारिक शक्ति में ही है।

एडीजी ने की अपराधों की समीक्षा, त्यौहारों पर सतर्कता बरतने के दिए निर्देश

लोक पहल

शाहजहांपुर। अपर पुलिस महानिदेशक, बरेली जोन, बरेली' पीसी मीना ने पुलिस लाईन सभागार में पुलिस अधिकारियों की बैठक ली। इस दौरान उन्होंने आगामी त्यौहारों गणेश उत्सव व बारावफात की तैयारियों के सम्बन्ध में जानकारी ली तथा अधीनस्थों को आवश्यक निर्देश दिये। उन्होंने हत्या के पंजीकृत अभियोग एवं कृत कार्यवाही के अलावा लूट के अभियोंग जिनके अनावरण शेष है, के बारे में चर्चा की एवं आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये। साथ ही बलात्कार, पाक्सों एक्ट, गोवध निवारण अधि, धर्मान्तरण, दहेज मृत्यु से सम्बन्धित पंजीकृत अभियोग एवं कृत कार्यवाही के बारे में समीक्षा की। एडीजी श्री मीना ने सोशल मीडिया के विभिन्न माध्यमों पर सतर्क दृष्टि रखते हुए भ्रामक व आपत्तिजनक पोस्ट प्रसारित होने पर उसे ब्लॉक करते हुए सम्बन्धित के विरुद्ध विधिक कार्यवाही करने के निर्देश दिए। इस दौरान पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार मीणा, एएसपी ग्रामीण संजीव कुमार वाजपेयी, एसपी सिटी सुधीर जायसवाल व सभी क्षेत्राधिकारी, प्रतिसार निरीक्षक, सभी थाना प्रभारी एवं सम्बन्धित शाखा प्रभारी बैठक में मौजूद रहे।

नगर आयुक्त ने किया गांधी भवन का निरीक्षण

शाहजहांपुर (लोक पहल)। नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा ने डूडा की ओर से टाउन हॉल स्थित गांधी भवन प्रेक्षागृह के जीर्णोद्धार के लिए किये जा रहे कार्यों का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान नगर आयुक्त ने डूडा को निर्देश दिए कि गांधी भवन प्रेक्षागृह हेतु स्वीकृत आंकलन के अनुसार अब तक किये गए कार्यों की नगर निगम के मुख्य अभियंता की अध्यक्षता में कमेटी बनाकर जांच की जाए। निरीक्षण के समय मुख्य अभियंता सिविल एसके अम्बेडकर, परियोजना अधिकारी डूडा अतुल कुमार पाठक, कलाकार एसोसिएसन के पदाधिकारीगण एवं अन्य लोग उपस्थित रहे।

हिन्दी विश्व में तीसरी सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषा: सुरेश खन्ना

■ हिन्दी दिवस पर उपजा और वीआईपी ग्रुप ने पत्रकारों, साहित्यकारों व शिक्षाविदो को किया सम्मानित

लोक पहल

शाहजहांपुर। प्रदेश के वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री सुरेश खन्ना ने कहा है कि हमारी मातृ भाषा हिंदी पूरी दुनिया में सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषाओं में तीसरे नंबर पर हैं और यह हमारे लिए गौरव की बात है। श्री खन्ना प्रेस क्लब में उपजा व वीआईपी ग्रुप विद हैल्पिंग हैंड्स की ओर से आयोजित हिंदी दिवस समारोह में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे।

श्री खन्ना ने कहा कि हिंदी के मामले में हम पूरी दुनिया में नंबर तीन पर हैं और इसे हम नंबर एक पर लाने का दायित्व हमारे साथ-साथ आप सभी का भी बनता है उन्होंने कहा कि मैं तमिलनाडु गया था वहां पर मैंने अपना भाषण हिंदी में ही दिया जबकि वहां पर हिंदी नहीं बोली जाती है।

श्री खन्ना ने कहा कि हमें मलाल है कि हम हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा नहीं बना पाए इसका कारण है कि हम अपनी परंपराओं से बाहर नहीं निकालना चाहते हैं। इस मौके पर वीआईपी ग्रुप विद हैल्पिंग हैंड्स की अध्यक्ष नीतू गुप्ता, उपजा के जिला अध्यक्ष अभिनय कुमार गुप्ता, वीआईपी ग्रुप की डायरेक्टर डॉ. दीपा सक्सेना आदि ने भी सम्बोधित किया। इस दौरान पत्रकार राजीव शर्मा, अजय अवस्थी, दीप श्रीवास्तव, बलराम शर्मा के अलावा कवि ज्ञानेंद्र मोहन 'ज्ञान', सुशील दीक्षित 'विचित्र', शिक्षाविधि डॉ.आलोक मिश्रा, प्रो. रूपांशु माला, डॉ. फैयाज अहमद, गुलिश्ता खां

आदि को मंत्री सुरेश खन्ना अंग वस्त्र तथा सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पत्रकार ओंकार मनीषी ने की। कार्यक्रम का संचालन डा. सुरेष मिश्रा ने किया। कार्यक्रम में जिला सहकारी बैंक के चेयरमैन डीपीएस राठौर, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष अजय प्रताप सिंह यादव, पत्रकार मोहम्मद इरफान, पंकज सक्सेना, आरिफ सिद्दीकी, जरीफ मलिक आनंद, सुयश सिन्हा, विश्व मोहन बाजपेयी, धनन्जय बाजपेयी, राम लड़ैते तिवारी, अमर दीप रस्तोगी, राजीव मिश्रा, एम.आई.खान, विषेक मिश्रा, राजीव शुक्ला, मनोज मंजुल, पद्महस्त दिवाकर, संजीव गुप्ता, अमित सक्सेना, संजय श्रीवास्तव, राम विलास सक्सेना, राजीव शुक्ला, राजेश सक्सेना, मनोहर लाल, शान मियां, तारा चन्द्र, तराना जमाल, नुजहत अंजुम, अमरजीत बाबा, ज्योति गुप्ता नेहा सक्सेना, रिद्धि बहल, संजय अग्रवाल, रोहित सिंघल, शाहनवाज खान, अनिल गुप्ता प्रधान, महेंद्र दुबे, विक्रान्त सक्सेना आदि मौजूद रहे।

वैश्विक विकास में सहायक है अंग्रेजी भाषा

एसएस कालेज में 'रोल आफ इंग्लिश लैंग्वेज इन ग्लोबल डेवलपमेंट' पर राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय के अंग्रेजी विभाग द्वारा, रोल ऑफइंग्लिश लैंग्वेज इन ग्लोबल डेवलपमेंट विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि गोकुल दास गर्ल्स पीजी कॉलेज मुरादाबाद की प्राचार्य डॉ चारू मेहरोत्रा ने कहा की अंग्रेजी भाषा विज्ञान ,तकनीक और वाणिज्य के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर समन्वय स्थापित करती है। इस भाषा की जानकारी से सूचनाओं को व्यापक रूप से साझा करना सरल होता है। यह भाषा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की स्थाई भाषा हो गई है। अध्यक्षता करते हुए स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती ने कहा कि अंग्रेजी भाषा अंतर्राष्ट्रीय विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करती है क्योंकि वह अधिकांश देशों में बोली और समझी जाती है। उन्होंने कहा की देशों के मध्य होने वाले समझौतों को अंग्रेजी भाषा के प्रयोग में सरल बना दिया है। विशिष्ट अतिथि केजीके कॉलेज मुरादाबाद के अंग्रेजी विभाग के प्रोफेसर डा संजय जौहरी ने कहा कि अंग्रेजी भाषा केवल एक देश की भाषा नहीं है बल्कि इसकी व्यापकता ने इस विश्व की भाषा बना

दिया है। संयोजक सचिव डॉ बरखा सक्सेना के संचालन में हुए कार्यक्रम का शुभारंभ स्वामी शुकदेवानंद के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन और पुष्पांजलि से हुआ। डॉ प्रतिभा सक्सेना और छात्राओं ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की । डॉ अरुण कुमार यादव ने विषय प्रवर्तन किया। अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डा शालीन सिंह ने स्वागत भाषण दिया जबकि प्राचार्य डॉ आर के आजाद ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर उप प्राचार्य प्रो अनुराग अग्रवाल, डॉ देवेन्द्र सिंह, डा कमलेश गौतम, डॉ सचिन खन्ना, डा रूपक श्रीवास्तव, डा पद्मजा मिश्रा डॉ रचना शुक्ला, डॉ प्रीति, डॉ पूजा बाजपेई, डा राम शंकर पांडे, डॉ जे एस ओझा, डॉ आलोक कुमार मिश्रा आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम के संयोजन में सुमित तिवारी, दिव्यानी, फिज़ा कृतिका शर्मा, सोनम, सत्यम शुक्ला, प्रखर दिक्षित ,वैष्णवी, दिव्यांशी, साक्षी, महक ,प्रखर दिक्षित, हर्षित तिवारी, व्याख्या सक्सेना आदि छात्र-छात्राओं का विशेष योगदान रहा।

भारत में जीएसटी लागू होने से आई करों में कमी: प्रो. महरूख मिर्जा

एसएस कालेज में जीएसटी पर राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन

लोक पहल

शाहजहाँपुर। एसएस कॉलेज के वाणिज्य विभाग में 'भारत के आर्थिक विकास में वस्तु एवं सेवा कर की भूमिका' विषय पर राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ उप प्राचार्य व वाणिज्य विभागाध्यक्ष प्रो. अनुराग अग्रवाल ने स्वामी शुकदेवानंद के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर व पुष्पांजलि अर्पित कर किया। मुख्य अतिथि ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्विद्यालय लखनऊ के पूर्व कुलपति प्रो. महरूख मिर्जा ने कहा वस्तु एवं सेवा कर भारत सरकार की अप्रत्यक्ष कर व्यवस्था है। भारत में जीएसटी लागू करने का इरादा व्यपारियों के लिए कर व्यवस्था को आसान बनाना है। भारत में जीएसटी की सुगमता के कारण करों में कमी आई है। डा. मनीष कुमार ने कहा कि जीएसटी के आने से भारत में केंद्र सरकार और राज्य सरकारों के बीच वित्तीय संबंधों में मौलिक बदलाव आया है। डा. विजय तिवारी ने अतिथियों को अंगवस्त्र ओढ़ाकर सम्मानित किया।

वंशिका यादव, शरिया फातिमा व श्रीति झा ने सभी अतिथियों का चंदन तिलक व पुष्प भेंट कर स्वागत किया। सेमिनार में चले चार तकनीकी सत्र में अच्छे अंक प्राप्त करने वाले शैलेन्द्र अवस्थी रोहित शर्मा, स्नेह वर्मा, रहमत जहाँ, आशुर्ति, पलक राठौर को सम्मानित किया गया। डा. रूपक श्रीवास्तव के संचालन में हुए सेमिनार में, स्वागत भाषण डा. देवेंद्र सिंह ने दिया, सभी के प्रति आभार डा कमलेश गौतम ने व्यक्त किया। इस अवसर पर डा. गौरव सक्सेना, डा. अजय कुमार वर्मा, डा. संतोष प्रताप सिंह, डा. सचिन खन्ना, अभिषेक बाजपेई, यशपाल कश्यप , देव सिंह कुशवाहा, समेत बड़ी संख्या में शिक्षक व छात्र- छात्राएं उपस्थित रहे।

सीएचसी भावलखेड़ा में मनाया गया कन्या जन्मोत्सव

शाहजहांपुर (लोक पहल)। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना के तहत सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भावलखेड़ा में कन्या जन्मोत्सव मनाया गया तथा माताओं व बच्चों को उपहार वितरित किये गये।

इस अवसर पर वन स्टॉप सेंटर केंद्र प्रबंधक नमिता यादव ने महिलाओं को बेटियों के प्रति अच्छी सोच रखने तथा बेटा बेटी में कोई अंतर न करने तथा समय समय पर टीकाकरण कराने के लिए प्रेरित किया।

प्रभारी महिला कल्याण अधिकारी अमृता दीक्षित ने कहा कि कन्या जन्मोत्सव का उद्देश्य कन्या भ्रूण हत्या को रोकना है तथा समाज में बालिका के जन्म के प्रति सकारात्मक सोच को बढ़ावा देना है।

कार्यक्रम में एचईओ रामकृपाल, आशा नन्ही, रुबीना, शकुंतला, रजनी, उपस्थित रहे।

भारतीयों को विदेशियों से हिंदी में बात करने की जरूरत: प्रो. एम.पी. शर्मा

लोक पहल

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन पर राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी कार्यालय में 'हिंदी की वैश्विक स्थिति' पर परिचर्चा व कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ कवियों और अतिथियों के स्वागत से हुआ। कवियों में उपेंद्र पांडेय, डॉ. निवेदिता झा, सुश्री रिंकल शर्मा, रणविजय राव, मनोज भावुक और डॉ. अवधेश उपाध्याय आदि ने अपनी रचनाएं प्रस्तुत की। वक्ता के रूप में डॉ. ब्रजेश शर्मा, पूर्व आचार्य महामती प्राणनाथ, पीजी कॉलेज मऊ चित्रकूट और डॉ. लवकुश कुमार, सहायक प्रोफेसर हिंदी विभाग कालिंदी महाविद्यालय दिल्ली विश्वविद्यालय उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. महेंद्र पाल शर्मा, जामिया विश्वविद्यालय ने की। उन्होंने कहा कि हमें विदेशियों से हिंदी में बात करनी चाहिए, क्यूंकि अक्सर विदेशी लोग जब भारत आते हैं तो भारत के लोग अंग्रेजी में बोलने लग जाते हैं, हमें चाहिए की हम यथासंभव उनसे हिंदी में बात कर हिंदी शब्दों से परिचित करना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन डॉ राजेश कुमार मांझी ने किया तथा धन्यवाद सार्क जर्नलिस्ट फोरम के अध्यक्ष डॉ. अनिरुद्ध कुमार सुधांशु ने व्यक्त किया।

इस दौरान एल्विस जोसेफ, राष्ट्रीय महासचिव रालोजपा, जियालाल, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष दलित सेना, डॉ रविंद्र कुमार सिंह बुद्धिजीवी प्रकोष्ठ, रामजी सिंह, सुभाष बिहारी, आनंद कुमार, रविंद्र पासवान मौजूद रहे।

बिजी बीज प्री स्कूल में विराजे गणपति, बच्चों ने किया पूजन-अर्चन

लोक पहल

शाहजहांपुर। गणेश चतुर्दशी के अवसर पर साउथ सिटी स्थित बिजी बीज प्री स्कूल में गणपति का स्वागत धूम धाम से किया गया। स्कूल में अध्यापिकाओं ने ईको-फ्रेंडली गणपती की मूर्ती को बनाकर स्थापित किया। मिट्टी से बनाई गयी गणपती की मूर्ती का बच्चों ने वंदना और ढोल नगाड़ों से स्वागत किया। प्रिंसिपल वसु गोयल ने गणपती जन्म से जुड़ी हुई पौराणिक कथा सभी बच्चों को सुनाई और चल चित्र के माध्यम से भी गणपती जन्म की कथा दिखाई ।

एक दिन के लिए पधारे गणपती का फलफूल और मोदकों से स्वागत किया। स्वागत निदेशक रोहित गोयल सहित शक्ति तिवारी, मंजु कुशवाह, आस्था सक्सेना, संध्या शुक्ला, दीपाली गुप्ता, तृप्ति रस्तोगी गौसिया इब्तस्तम व सभी बच्चों ने किया। इस मौके पर षिक्षिकाओं और बच्चों ने गणपति का पूजन-अर्चन भी किया।

लोक पहल, राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक, मुमुक्षु आश्रम, शाहजहॉपुर, प्रधान संपादक अरूण पाराशरी

लोक पहल हिन्दी साप्ताहिक स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक डा. अवनीश कुमार मिश्रा द्वारा शाहजहॉपुर प्रिन्टर्स जज साहब वाली गली, तारीन बहादुरगंज जिला शाहजहॉपुर 242001 से मुद्रित व 160 रोशनगंज लक्ष्मी राईस मिल, शाहजहॉपुर 242001 उ0प्र से प्रकाशित। संपादक–सुयश सिन्हा मो. 9935740205 E-mail : lokpahalspn@gmail.com समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र शाहजहॉपुर होगा।